AGRADIANCE

"To Reach the Good News to the Poor"

For Private Circulation Only

AGRA ARCHDIOCESAN NEWS LETTER

JANUARY, 2022

नववर्ष एवं गणतन्त्र दिवस की शुभकामनाएं।

ST. JOHN IN THE WILDERNESS CHURCH, SIKANDARA, AGRA

ST. JUDE'S CHURCH, KAULAKHA, AGRA

BLESSED DEVASAHAYAM (FEAST 14 JAN)

DEATH ANNIVERSARY OF BAPU, 30 JAN

BAPTIST CHURCH, PRATAPPURA CROSSING AGRA

CENTRAL METHODIST CHURCH, M.G. ROAD, AGRA

Church Unity Octave 17-24 January

कलीसियाई एकता का अठवारा 17–24 जनवरी

Hearty Congratulations Your Grace! on First Anniversary of Your Installation as the Archbishop of Agra

Christmas celebrated in the Archdiocese

Cathedral Church

St. Mary's Church

St. Patrick's Church, Agra

St. John Paul, Fatehabad

Central Jail, Firozabad

Masih Vidyapeeth, Etmadpur

Christian SS Society

St. Patrick's Church Social Work (Canossian Sisters)

Editorial

प्रिय मित्रों, नव वर्ष 2022 की हार्दिक शुभकामनाएं। हमारी प्रार्थना है, कि यह नया साल आप सबके जीवन में प्यार, खुशियां, ईश्वर की आशीष और स्वास्थ्य लेकर आए। ईश्वर आप सबको स्वस्थ और सुरक्षित रखे। यह वर्ष आपके लिए कल्याणकारी और मंगलमय हो, ऐसी हमारी कामना है।

शीघ्र ही हम अपने राष्ट्र का 73वां गणतन्त्र दिवस मनाने वाले हैं। **अग्रेडियन्स** सभी देशवासियों को गणतन्त्र दिवस की शुभकामनाएं देता है। क्या हम वास्तव में गणतंत्र हैं? हम अपने राष्ट्र के प्रति कितने जिम्मेदार और वफादार हैं, यह हमारे लिए एक गंभीर विषय है। हम यह न सोचें कि भारतवर्ष हमें क्या दे सकता है या क्या कर सकता है, किन्तु यह सोचें कि हम भारतवर्ष के लिए क्या कर सकते हैं? इसके उत्तर में ही हमारी सच्ची देशभक्ति परिलक्षित होती है।

देश के बहुत से राज्यों में विधानसभा चुनावों की तारीखें घोषित हो चुकी हैं। और इसके साथ ही अवसरवादी मंत्रियों-विधायकों का एक पार्टी छोड़कर दूसरी पार्टी में पलायन भी शुरु हो चुका है। ऐसे मौका परस्त नेताओं को रोकने के लिए अभी तक कोई सशक्त कानून नहीं बना है। अपनी कुर्सी खिसकने या पार्टी की नैय्या डूबते देखते ही दूसरी ओर छलांग लगा देते हैं, क्योंकि दूसरे छोर पर घास हमेशा हरी नजर आती है।

नव वर्ष 2022 के लिए आपने क्या प्रण किया है? क्या छोड़ेंगे और क्या नया अपनाएंगे? सिस्टर शालिनी और श्रीमती निशी अगस्टिन नए संकल्प/ नए प्रण लेने में हमारी सहायता कर रही हैं। सिगरेट-बीड़ी, पान, तम्बाकू या मदिरापान छोड़ना कोई बड़ी बात नहीं है, यदि त्यागना ही चाहते हैं तो अपनी किसी बुरी आदत को छोड़ने का संकल्प लें... हो सकता है, कि प्रण करने के कुछ ही दिन बाद पुनः वही हरकत करने लगें, निराश-हताश न हों, जहां गिरे, वहीं से फिर उठने का प्रयास करें... उठना गिरना हमारे मानवीय स्वभाव की पहचान है, अगर हम कभी गिरें ही नहीं तो फिर हम में और स्वर्गदूतों में अन्तर ही क्या रह जायेगा। प्रभु से क्षमा और कृपा मांगकर पुनः उठें, अपने संकल्प दोहराएं... आगे बढ़ें। प्रभु हमारी सहायता करेंगे।

सर्दी और संक्रमण अपने चरमोत्कर्ष पर है। संपूर्ण उत्तर भारत गलन और कोहरे की घनी चादर में लिपटा है। भयानक, हड्डी कंपा देने वाली शीत लहर जारी है। हम अपने घरों और गर्म बिस्तर में बैठकर भूल जाते हैं, कि हमारे ही जैसे हजारों लोग इस सर्दी में अपने घरों से बाहर सड़कों पर, स्टेशनों पर या पेड़ों के नीचे ठण्ड में सिकुड़ रहे हैं। काश कि हम उनके लिए कुछ कर पाते। अमित कपूर ने इससे पहले भी आगरा में करके दिखाया है और अब वे हिमाचल प्रदेश, दिल्ली में भी वही नेक काम कर रहे हैं। जरूरतमंद लोगों को गर्म कपड़े और कंबल आदि बांट रहे हैं। आप भी अपने पुराने गर्म कपड़े, रजाई-गद्दे और शॉल आदि गरीबों को, जरूरतमंदों को बांट सकते हैं और इसे देने के लिए आपको दिल्ली या हिमाचल प्रदेश जाने की जरूरत नहीं है। बस अपने घर से बाहर झांकिए, निकलिए आपको 'जीसस' यहीं कहीं ठण्ड से सिकुड़ते मिल जाएंगे।

सर्दी के साथ-साथ संक्रमण भी कहर बरपा रहा है। कोरोना या कोविड-19 अपने नए-नए अवतार में आ रहा है। कभी डेल्टा, तो कभी कुछ और! अब उसका नया रूप आ गया है- ओमिक्रॉन। ये कोरोना बीमारी न होकर मानो किसी आई.टी. कम्पनी का कोई प्रोडक्ट हो। हर वर्ष अपने नए संस्करण या इम्प्रूवड वर्जन के रूप में मार्केट में आ रहा है। यह नया स्वरूप बहुत भयानक और घातक साबित हो सकता है, यदि हमने इससे बचने की सावधानी नहीं बरती। सरकारी अनुदेशों का पालन करें, मास्क पहनें, सामाजिक दूरी बनाए रखें और बार-बार साबुन से अपने हाथ धोते रहें। भीड़ भाड़ वाली जगहों पर जाने से बचें और अनावश्यक यात्रा-पार्टी, सैर-सपाटों से बचें। अपने बचाव में ही हमारी और दूसरों की सुरक्षा है।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 18-25 जनवरी तक कलीसियाई एकता के लिए सभी मसीही प्रार्थना करते हैं। आगरा की यह अनूठी मिसाल है कि इन दिनों सभी मसीही विश्वासी प्रतिदिन आगरा नगर के विभिन्न गिरजाघरों में जाकर कलीसियाई एकता के लिए प्रार्थना करते हैं। सभी पल्ली पुरोहितों और पासवानों से अनुरोध है कि आप भी अपनी कलीसिया/गिरजाघर में कलीसियाई एकता के लिए प्रार्थना, आराधना समारोह आयोजित करने का प्रयास करें। उसकी फोटो और समाचार **अग्रेडियन्स** में प्रकाशनार्थ हमें भेजने की कृपा करें। हमें प्रसन्नता होगी।

आपके पत्रों, सुझावों और आलोचनाओं का हमें सदा इन्तजार रहता है। प्रभु आपको आशीष दे।

ख्रीस्त में आपका,

फादर यूजिन मून लाज़रस
(कृते, अग्रेडियन्स परिवार)

Shepherd's Voice

On 26th January we will be celebrating the 73rd Republic Day. It is the day to pledge our lives and our love to our Mother land. It is the day to rededicate ourselves to the service of our country and our countrymen/women. It is the day to resolve that we will not fail to make our contribution to the work of nation-building, that we will strain our every muscle and expend every ounce of our energy to create an Indian society in which there will reign equality and justice, peace and harmony, progress and self-reliance. It is the day to pledge that we will collaborate with all people of good will to create a Kingdom of God here. In that kingdom there will not be walls of prejudice, but only bridges of understanding; there will not be the cancer of doubt, but only a healthy trust. In that society sadness will give way to gladness, weeping and lamenting to singing and dancing; doubt will be replaced by faith, and despair by hope.

Reinhold Niebuhr, a spiritual writer says, "Nothing that is worth doing can be achieved in our lifetime. Therefore, we must be saved by hope". Vaclav Havel, another well known writer says, "I cannot imagine that I could strive for something if I did not carry hope in me. I am thankful to God for this gift. It is as big a gift like life itself."

Hope is the desire and the expectation to possess something good in the future. In Christian life hope is the conviction that God can bring good out of evil, light out of darkness and life out of death. So there is a great difference between expectation and Christian hope. Expectation is, given the circumstance, what is likely to happen. But hope is something that we believe, something that we are convinced of even though the circumstances say quite the contrary.

Hope is difficult, especially when there are so many bad things happening in our world today, depressing and discouraging realities such as violence, poverty, war, hunger, disease, Covid-19, environmental problems, communalism, divisive politics, economic instability and so forth. Knowledge of these realities makes it increasingly more difficult to hope that a better future is possible. Dorothy Day who worked untiringly against the discouraging realities of social injustices once said, "No one has the right to sit down and feel hopeless. There is too much work to do." Therefore, hope means more than merely sitting round and wishing for a better future. It means making that better future a reality.

✠ **Raphy Manjaly**
(Archbishop of Agra)

महाधर्माध्यक्ष का संदेश (हिन्दी अनुवाद)

आगामी 26 जनवरी को हम अपने राष्ट्र का 73वाँ गणतन्त्र दिवस मनाएंगे। यह एक खास दिन है, जब हम जीवन से और अपनी मातृभूमि से प्रेम करने की शपथ लेते हैं। यह दिन है, जब हम अपने देश और देशवासियों की सेवा करने की प्रतिज्ञा को पुन: दोहराते हैं। इस दिन हम पुन: प्रतिज्ञा करते हैं, कि हम अपने राष्ट्र-निर्माण का कार्य करने से कभी पीछे नहीं हटेंगे। हम अपनी सारी शक्ति और ऊर्जा को एक ऐसे भारतीय समाज की रचना करने में करेंगे, जहाँ समानता और न्याय, शांति और समन्वय, उन्नति और आत्म निर्भरता हो। यह ऐसा दिन है जब हम यह शपथ लेते हैं, कि हम सभी भले/नेक लोगों के साथ मिलकर इस धरती पर ईश्वर के राज्य की स्थापना के लिए कार्य करेंगे। उस राज्य में पूर्वाग्रहों की दीवारें नहीं होंगी, बस आपसी समझदारी के सेतु होंगे, वहाँ संदेह का कैंसर नहीं होगा, सिर्फ एक स्वस्थ विश्वास होगा। ऐसे समाज में दु:ख-पीड़ा की जगह आनन्द होगा, रूदन और शोक के स्थान पर गायन और नृत्य होगा, संदेह की जगह विश्वास और निराशा के बदले आशा होगी।

रेनहोल्ड नीब्हूर नामक एक आध्यात्मिक लेखक का कहना है, कि ''हमारे जीवन में ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जिसे हम प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिए, हमें आशावादी होना चाहिए।'' वाक्लाव हेवल नामक एक अन्य प्रसिद्ध लेखक का कहना है, कि ''मैं इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकता, कि यदि मुझमें आशा नहीं है तो मैं किसी भी चीज को प्राप्त कर सकता हूँ। इस वरदान के लिए मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ। यह जीवन के समान ही एक बड़ा वरदान है।''

आशा एक इच्छा है, और भविष्य में कुछ अच्छा पाने की उम्मीद है। ख्रीस्तीय जीवन में आशा वह विश्वास है, कि ईश्वर बुराई में से भी अच्छाई, अन्धकार में से ज्योति और मृत्यु में से जीवन निकाल सकता है। अत: उम्मीद और ख्रीस्तीय आशा में एक विशाल अन्तर है। उम्मीद परिस्थितियों के अनुकूल पूर्ण हो जाती है, किन्तु आशा वह है, जब हम विश्वास करते हैं, चाहे परिस्थितियां कितनी भी विपरीत या प्रतिकूल हो।

आशा करना आज बहुत कठिन है, विशेषकर आज जब हम चारों ओर बुरी बातों/घटनाओं को होते देख रहे हैं। निराशाजनक और हताश करने वाली घटनाएं, जैसे, हिंसा, निर्धनता, युद्ध, भुखमरी, महामारियां, कोविड-19, पर्यावरण सम्बन्धी कठिनाइयां, विभाजनकारी राजनीति, आर्थिक-अस्थिरता आदि। इन वास्तविकताओं की जानकारी इसे निरन्तर कठिन बनाती है, कि एक सुखद भविष्य सम्भव है। डोरोथी डे, जिन्होंने सामाजिक अन्याय के विरुद्ध निरन्तर कार्य/संघर्ष किया, ने एक बार कहा था, कि ''किसी को यह अधिकार नहीं है, कि बैठकर स्वयं को निराश महसूस करे। बहुत सा कार्य करना अभी बाकी है।'' अत: आशा का अर्थ यह नहीं है, कि हम हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहें और एक सुखद भविष्य की कामना करते रहें। इसका अर्थ है, कि उस सुखद भविष्य को वास्तविकता में बदलने की कोशिश करें।

प्रभु आपको आशीष दे।

✠ राफी मंजलि

(महाधर्माध्यक्ष, आगरा महाधर्मप्रांत)

ARCHBISHOP'S ENGAGEMENTS (JANUARY, 2022)

1	New Year Holy Mass: Cathedral Church
6	Holy Mass: Asha Sadan, Noida
	Programme : Asha Sadan, Noida
8	Journey to Kerala
20	Return to Agra
27	Clergy Recollection
29	Holy Mass: St. Xavier's Regional Seminary, Agra
30	CRI Meeting : Holy Mass, St. Joseph's Pastoral Centre, Agra
	Martyrs' Day Celebration, St. Peter's College, Agra

Synodal Church in the New Year 2020
'Learning to Walk in the Spirit'

For the past few months, I have been in constant turmoil on account of the ill health of my father to whom I am deeply attached. Medication, counselling, prayers, tears…all seem to be going futile as there seems to be no improvement in his health. Last evening, having almost reached the point of despair, I opened the Holy Bible and came upon John 14:16 that says, "I will ask the Father, and he will give you another Helper, to be with you forever." I cried out and prayed, "Lord, I give up! I surrender! Will you just take over?"

I have heard, once, a group of translators and interpreters in Africa were trying to sort out how to interpret the word 'Paracletos, the helper' to natives and they saw a group of porters, carrying heavy loads, ten of them and there was one of them who carried nothing. They thought, 'He might be the boss'. But he told them, "I am not the boss. I am the one who will drop down on my knees, to come alongside any one of these people if they are tired, feel like giving up or collapse. Here I am - I help them carry the load and that's my job."Behold! Now they knew the exact meaning of 'Paracletos, the Helper'! In John 14:16, Jesus is saying, "If you are tired and feel like giving up, I give you somebody exactly like me 'another helper'- to be your 'Paracletos'! You just need to hand over the control to Him."

Once I was praying with one of the sisters in the chapel and the door was closed. Another sister opened the door and came in talking aloud and making noise. My instant reaction 'in the flesh' was, "Can't you see, we are praying? Can you please be quiet?" That reaction would have been really hurting. But, I consciously stopped and I prayed, "Holy Spirit, teach me what to say to her. Take control of me right now." And I was shocked at what came out of my mouth! I said to her, "Sister, we are praying. Would you like to join us?" I was totally blown over when she replied, "Oh dear, I am so sorry. I didn't know you were praying together. Yes, I would love to join you." And behold, now instead of two persons praying, there were three of us praying together!

Friends, let's pause and check, who is driving our lives? The Holy Spirit or the spirit of the flesh? Let's develop the habit of walking in the Spirit by being sensitive to His voice, humbling ourselves and allowing Him to take control of our thoughts, words and actions at every moment and in everything,as we emerge as a 'SYNODAL CHURCH' in the New Year 2022!

Wish you all an abundantly joyful and fruitful 2022, as you learn the secret of true Christian life - WALKING IN THE SPIRIT 'AS A HABIT'!

Sr. Rekha Punia, UMI
Nirmala Provincialate, G. Noida

नववर्ष और आत्मिक संघर्ष

नई किरण, या सवेरा, नववर्ष एक बार फिर से नव वर्ष हमारे सामने है। प्रभु का धन्यवाद हो! हम फिर नए संकल्प लेंगे, अपने आपसे वायदे करेंगे, मैं इस वर्ष ये आदत त्याग दूँगा, मैं अब ये छोड़ दूँगी, तरह-तरह की तौबा की बातें, और फिर फरवरी आते-आते फिर वही हमारा ढर्रा, वही चाल-चलन, वही आदतें, वही व्यवहार, हममें बदलाव कहाँ आता है? कोई नयापन नहीं, बस दिन, महीने साल यूँ ही हर वर्ष की तरह गुज़रते जाते हैं।

पिछले वर्ष बहुत उथल-पुथल और हलचल थी, हृदय को झकझोरने वाली घटनाएं, आँसू, आशंका तो कुछ उल्लास के क्षण भी आए थे। थोड़ी खुशी - थोड़ा गम। मगर हृदय विदारक बातें ज्यादा थीं। लेकिन जैसे-जैसे जीवन पटरी पर आया, हम फिर पहले की तरह, जी हाँ। 'नूह' के समय का सा सब कुछ, वही जीवन की आपा धापी, वही मस्ती-धमाल, पार्टी-उत्सव, हंगामा। कहाँ बदले हम? न्यू ईयर ईव के नाम पर हो हल्ला, भोर तक बस शोर-शराबा, क्या यही है हमारे जीवन का नववर्ष?

मित्रों! लूकस अध्याय 3:6 से 9 में प्रभु येसु कहते हैं- ''इस अंजीर के वृक्ष में मैं प्रतिवर्ष फल ढूँढने आता हूँ, पर फल नहीं पाता।'' प्रत्युत्तर में प्रभु से याचना की जाती है कि ''इस वर्ष इसे और लगा रहने दे; यह अब भी फल न दे तो तू इसे काट डालना।'' प्रभु की दृष्टि में बेकार जगह घेरे रहने वाला वृक्ष काट डालने योग्य है।

मित्रों! ऐसा ही है हमारा भी जीवन। परमेश्वर वर्ष दर वर्ष हमें अवसर देता है कि, हम फल उत्पन्न करें। फलवान बनें। प्रभु हमें फल रहित अवस्था में भी प्यार करता है। क्योंकि, ''जब हम पापी ही थे, प्रभु हमारे लिए क्रूस पर मरा।'' हमारा कर्तव्य है कि हम फल अर्थात गुण उत्पन्न करें। प्रभु हमारे जीवन के एक-एक वर्ष बढ़ाता चलता है कि अब भी अवसर है, अन्यथा हम उसके क्रोध से बच नहीं पायेंगे। हम काट डालने लायक ही ठहरेंगे। वह हमसे अच्छे फल की आशा करता है। लेकिन वह प्रतिवर्ष हमसे निराश ही होता है।

प्रभु हमसे उम्मीद लगाए है, तो हम मसीहियों को चाहिए कि हम अपने फल से पहचाने जाएं। हम सुसमाचार प्रचार के लिए अपने अन्दर गुण उत्पन्न करें।

'वर्ष खत्म हुआ' यह अर्थ नहीं रखता है, मायने यह रखता है कि आपने पूरे वर्ष क्या किया? पिछले वर्ष ऐसा क्या किया जो दूसरों को जीवन देने वाला था? या किसी विशेष कारण से पिछला वर्ष मसीही जीवन के लिए कुछ यादगार बना? इस नववर्ष में आपकी प्रभु में क्या योजनाएं हैं? या हम इस वर्ष को भी यूँ ही गुज़र जाने देंगे? फल रहित अंजीर वृक्ष की तरह?

मित्रों! हम संक्रमण के दौर से गुजर रहे हैं; अब भी वक्त है। हम सम्पूर्ण मन, हृदय और विवेक से प्रभु को प्यार करें व उसकी आज्ञा मानें। पश्चाताप कर प्रभु के पास आएं। अपने अन्दर हम आत्मा के फल उत्पन्न करें और प्रभु की गवाही बनें। हम अपने में प्रेम, क्षमा, नम्रता, दीनता, संयम, आनन्द, शान्ति और धीरज रूपी फल लगने दें, फलवान बनें।

बीते वर्ष के लिए प्रभु को धन्यवाद अवश्य दें क्योंकि

उसी की कृपा से हम नव वर्ष के इस वर्तमान में आए हैं।

मित्रों! जीवन का सबसे उत्तम उद्देश्य प्रेम है सभी धर्म और ग्रंथ भी कहते हैं– ''प्रेम बिना जीवन व्यर्थ है। प्रेम रहित जीवन शून्य है।'' तो आज से हमारे जीवन का केन्द्र बिन्दु बस प्रभु से प्रेम और उसकी सन्तानों से प्रेम करना ही होना चाहिए। चाहे हम पर कितने ही दोषारोपण क्यों न हो। हमें क्षमा करना है, धीरज नहीं खोना है। नम्रता, दीनता, शान्ति बनाए रखनी है और प्रभु में सदैव आनन्दित रहना है।

जरा सोचिए हम इस धरती पर आज भी जिन्दा क्यों हैं? इसके जवाब में हमें समझ लेना है कि परमेश्वर की विशेष योजना के तहत ही हमारी साँसे आज भी चल रही हैं। अब हमारा कर्तव्य है कि हम औरों का जीवन भी बचाएं। उनकी आत्मा बचाएं।

तो पिछली बातें भुला दीजिए। आज से हम हमेशा मेल मिलाप और प्रेम की भाषा बोलें, क्षमावान बनें। किसी भी परिस्थिति में हम धीरज न खोएं। इस पृथ्वी पर हमारा जीवन अस्थायी है। हम यहाँ यात्री मात्र हैं। हमारा वास्तविक घर परम पिता के समीप है, इस सत्य को पहचानें। इस वर्ष प्रभु को यह न कहना पड़े कि, ''मैं प्रतिवर्ष यहाँ आता हूँ; और इसमें फल नहीं पाता।''

मित्रों! हम आत्मा के फल अपने में लगने दें, जिससे प्रभु के साथ-साथ अन्य भी तृप्त हों। वर्ष दर वर्ष जीवन व्यर्थ न जाने दें। आप सभी को नव वर्ष की ढेरों शुभकामनाएं।

निशी अगस्टीन, कथीड्रल पल्ली, आगरा

"We saw his star in the east and we came to worship him." (Mt. 2:2)
''हमने उनका तारा पूरब में उदित होते देखा और उसे दण्डवत् करने आये हैं।'' (मत्ती 2:2)

THE WEEK OF PRAYER FOR CHRISTIAN UNITY : 17-24 Jan. 2022

कलीसियाई एकता का प्रार्थना अठवारा : 17-24 जनवरी 2022

"The Church Unity Octave is a perennial process of updating oneself, of being a better Christian in relation to one another... Unity in Christ is a matter of celebration in togetherness as well as a thing of continuous personal experience." We request you to make it an auspicious occasion of lively sharing and fellowship among our Christian brothers and sisters.

DAY & DATE	TIME	VENUE	PREACHER
Monday 17th	5.00 p.m.	**ST. GEORGE'S CATHEDRAL,** Sadar Bazar, Agra	Rev. Fr. Gregory Tharayil
Tuesday 18th	5.00 p.m.	**ST. PATRICK'S CHURCH,** 118, Prithvi Raj Road, Agra Cantt.	Rev. Gibrael Dass
Wednesday 19th	5:00 p.m.	**HAVELOCK METHODIST CHURCH,** Agra Cantt.	Rev. Fr. Viniversal D'Souza
Thursday 20th	5.00 p.m	**BAPTIST CHURCH,** Pratappura Crossing, Agra	Rev. Benyamin Dass
Friday 21st	5.00 p.m.	**ST. JOHN'S CHURCH,** Hospital Road, Agra **Inter Church Devotional Solo Singing** - Only two entries from a Church. - Musical Instruments are allowed. - Maximum duration of the song is four minutes.	Rev. Fr. Saji Palamattom (Jacob)
Saturday 22nd	5.00 p.m.	**CENTRAL METHODIST CHURCH,** M.G. Road, Agra **Inter-Church Bible Quiz** - Topic: **Gospel of St. Mark** - Participants: A team of two from each Church.	Rt. Rev. P.P. Habil Bishop of Agra Diocese, CNI
Sundayday 23rd	5.00 p.m.	**ST. PAUL'S CHURCH,** Civil Lines, Agra **Inter Church Devotional Group Singing** - A group should have minimum five members. - Only one entry from a Church. - Musical instruments are allowed. - Maximum duration of the group song is five minutes.	Rev. Fr. Dominic George
Monday 24th	5:00 p.m.	**CATHEDRAL OF THE IMMACULATE CONCEPTION** (Near St. Peter's College) **Prayer followed by** **(Prize Distribution and Fellowship)**	V. Rev. Sylvester Massey

★ Inter-Church 'Competitions' are meant for promoting love and brotherhood. ★ Please reach the names of the participants and the Church to the Secretary latest by Monday, 19th Jan. 2022 ★ Your whole-hearted participation makes the programme a success.

Please assemble in large numbers. **अधिक से अधिक संख्या में पधारकर ख्रीस्तीय एकता की साक्षी दें।**

Most Rev. Dr. Raphy Manjaly	Rt. Rev. P.P. Habil	Very Rev. Sylvester Massey	Rev. Fr. Moon (Secretary, C.F.A.)
Archbishop of Agra	Bishop of Agra Diocese C.N.I.	D.S. Methodist Church, Agra	Mobile: 8218505911

Tribe of Judah and Tribes of India

(A Comparative & Comprehensive Study)

Introduction:

Tribal community is very unique, culturally oriented, united and simple. India has one of the largest and diverse tribal populations in the world. They live and create homes that do not accept the conveniences and behaviors of the present day. They choose to be close to the land and follow the rules and lifestyle of their ancestors.

The tribes know their land and stay upon it as much as possible this keeps industry from encroaching on their way of life. Additionally, even if the tribes are surrounded by other tribes, they still have the common respect to stay within their own space, unless there are warring factions.

Etymology of word 'Tribe' and 'Tribal':

Tribe, in anthropology, notional social organization based on a set smaller groups, having temporary or permanent political integration and defined by traditions of common descent, language, culture and ideology. The term originated in ancient Rome, where the word 'tribus' denoted division within the state due to class, family and money. It later came into use as a way to describe the culture encountered through European. By the mid-19th century, many anthologists and other scholars were using this term.

"You can use tribe to refer to a group of people who are all doing the same thing or who all behave in the same way" (ref. Collins English Dict.). "A social group composed chiefly of numerous families, clans, or generations having a shared ancestry and language" (ref. Merriam Webstar).Tribal is used to describe things related to or belonging to tribes and the way that they are organized.

Tribe of Judah:

If you are familiarwith the Old Testament, then you will know the story of Jacob and his sons (cf.Gen 29:35). It was from these sons that the 12 tribes of Israel were formed. One of those tribes was the tribe of Judah. It is disputed as the name Judah was originally that of tribe or the territory it occupied and which was transported from which after the Israelites took possession of the promised land, each was assigned a section of land by Joshua, who had replaced Moses as leader after his death (cf. Gen 38). The tribe of Judah settled in the region south of Jerusalem and later became the powerful and most important tribe(cf. Jos15). Not only did it produce the great kings like David and Solomon but also, it was prophesied, the Messiah would come from among its members (cf. 2 Sam 7:16).

Hebrew meaning of the word Judah is Yadah(Praise). You are praising God with extended hands so when you think of Judah, think of lifted hands (cf. 1 Tim 2:8). Modern Jews, moreover, trace their lineage to the tribe of Judah and Benjamin (absorbed by Judah)or to the tribe, or group, of clans of religious functionaries known as Levites. While there are diverse elements within each tribe, there is some interesting fact about the tribe of Judah that are worth noting, 'God uses imperfect people to accomplished His perfect plan' (cf. Genealogy of Jesus, Mt 1:1-17)

Tribes of India:

The tribes are the autochthonous or native

people of the land who are believed to the earliest settlers in Indian Peninsula. They are generally called Adivasis, implying original inhabitants. The ancient and medieval literature mention a large number of tribes living in India.

Today, there are 104 million people that are part of tribal communities. Out of 104 million, they are divided up over a mere 50 different tribes.

Then, you might ask, who are Scheduled Tribe (ST)? In order to safeguard the social, educational and economic backwardness of some suffering communities, government of India notified 'Scheduled Tribes' by the Indian Constitution under 'scheduled 5' of the constitution. Hence tribe recognized by the Constitution are known as 'Scheduled Tribe.' Articles 366 (25) deems under those communities as per provisions contained in Clause 1 of Articles 341 and 342 of the Constitution respectively.Thus, the first specifications of Scheduled Tribes in relation to a particular State/Union Territory is by a notified order of the President, after consultation with the State governments concerned. These orders can be modified subsequently only through an Act of Parliament.

Tribal Theology:

Tribal theology in India is in the making. There are three approaches to tribal world-view evident while theologizing. The first, it is purely a contextualized theology by adaptation of tribal cultural values. The second, perspectives of gospel values are already present in the tribal culture (e.g -Santhal creation story in line with Genesis creation stories). The third approach insists that a Tribal theology has to emerge from a tribal world-view. The space centered tribal world-view contributes to the very content of tribal theology.

Fr. AlokToppo, DVK, Bengaluru

और निर्मल चला गया...

आगरा, 13 जनवरी। ''दिल के टुकड़े, टुकड़े करके मुस्कुरा के चल दिए, जाते-जाते ये तो बता जाते, हम जियेंगे किसके लिए?'' गीत की ये पंक्तियां उस समय चरितार्थ हो गईं, जब 'प्रेमदान' (मिशनरीज़ ऑफ चैरिटी), आगरा में जन्मा, पला-बढ़ा तीन वर्षीय निर्मल आश्रमवासी सभी धर्मबहनों, कर्मचारियों और सहवासियों को सुबकता छोड़कर बाल कल्याण आयोग, आगरा शाखा के अधिकारियों के साथ 'प्रेमदान' को छोड़कर हमेशा-हमेशा के लिए चला गया।

उस मासूम को तो यह तक नहीं मालूम कि उसे कहाँ ले जाया जा रहा था? कहाँ रहेगा? कौन उसकी देखभाल करेगा... वगैरह-वगैरह।

सिस्टर सुपीरियर श्रद्धेय सिस्टर एनालिस ने **अगेडियन्स** को बताया कि निर्मल एक सामान्य बच्चा है और उसे प्रेमदान के अन्य असामान्य बच्चों के साथ नहीं रखा जा सकता। यहाँ रहकर वह असामान्य बच्चों के व्यवहार और आदतें अपनाता जा रहा था। सरकारी नियमों के अनुसार ऐसे बच्चों को अलग रखा जाता है, उनकी देखभाल के लिए आयोग के प्रशिक्षित लोग होते हैं।

चूँकि निर्मल के माता-पिता हैं, इसलिए आयोग उसे किसी नि:सन्तान दम्पत्ति को एडाप्शन के लिए भी नहीं दिया जा सकता।

ऐसा प्रतीत होता है कि मिशनरीज ऑफ चैरिटी के गृह नक्षत्र अच्छे नहीं चल रहे हैं... मुसीबतें उनका पीछा नहीं छोड़ रही हैं। बस हम उनके लिए, उनके मिशन और करिज्मा के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं, कि प्रभु उन्हें इस परीक्षा की घड़ी में सबल बनाए। उचित निर्णय लेने की सद्बुद्धि दे।

अनन्त शान्ति का परमेश्वर

मनुष्य परमेश्वर की अनुपम कृति है और मनुष्य की महानता उसकी विद्धता है। मनुष्य सौन्दर्यशाली हो, ऊँचे कुल में जन्मा हो, अगर वह परमेश्वर से रहित है तो संसार में उसका कोई महत्व नहीं होता। जिस प्रकार पुष्प की शोभा उसकी सुगन्ध से होती है उसी प्रकार मनुष्य की शोभा परमेश्वर की विद्धता से होती है। आत्मा अमर, अजर है। उसमें अनन्त शक्ति और आनन्द का भण्डार है, क्योंकि जहाँ परमेश्वर का ज्ञान होता है, वहाँ शक्ति और ज्ञान दोनों होते हैं और वहाँ आनन्द भी होता है। मेघ चाहे उपाधियां एवं जागीरें बरसा दे, धन चाहें हमें खोजना शुरु कर दे, किन्तु परमेश्वर का ज्ञान तो हमें स्वयं ही खोजना होगा। तब तक लोहा गर्म होकर लाल न हो जाए तब तक उसे पीटकर मनोवांछित रूप नहीं दिया जा सकता। प्रभु यीशु ने कहा- 'मैं तुमसे सच कहता हूँ जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक की तरह ग्रहण न करेगा, वह उसमें कभी प्रवेश करने न पाएगा। (लूका 18:17)

सन्त पौलुस ने कहा- 'प्रभु में सदा आनन्दित रहो, फिर मैं कहता हूँ आनन्दित रहो।' (फिलिप्पियो 4:4) और 'अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है। (1 पतरस 5:7) परमेश्वर हमारा शरण स्थान और बल है संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायक। इस कारण हमको कोई भय नहीं (भजन संहिता 45:1-2)। यीशु ने कहा, 'तुमने मुझे नहीं चुना, परन्तु मैंने तुम्हें चुना है और ठहराया ताकि तुम जाकर फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से माँगो, वह तुम्हें दे।' (यूहन्ना 15:16-17) जो मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में अच्छा है उसको वह बुद्धि और ज्ञान और आनन्द देता है (सभोपदेशक 2:28) प्रिय परमेश्वर हमारे दृष्टि दोष को दूर करे और हमें लोगों को वैसा ही देखने में मदद करे जैसा आप प्यार और करूणा के साथ करते हैं। क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है। मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है। (1 समूएल 16:7)

जीवन तो हमें कुछ न कुछ देता है। उसका हम उपयोग करना सीखें, मनुष्य का जीवन तो परीक्षाओं का विश्वविद्यालय है। इसमें सफल होना ही जीवन का लक्ष्य है, परमेश्वर हमारे विश्वास को और अधिक विश्वास करने में हमारी मदद करे, यह बात सच और हर प्रकार से मानने योग्य है कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिए जगत में आया और वह हमारे सब क्लेशों में शान्ति देता है, ताकि हम उस शान्ति के कारण जो परमेश्वर हमें देता है उन्हें भी हम शान्ति दें जो किसी प्रकार के क्लेशों में हो। अनुग्रहकारी परमेश्वर हमारे जीवन को आशा से भर दे ताकि हम दया के कामों में लगे रहें, क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं, पर सामर्थ, प्रेम और संयम की आत्मा दी है। हम जानते हैं कि आप हर समय हमारे साथ हैं। हमें शान्ति और प्रेम की भावना दे और हमारे भय को दूर करे, क्योंकि जब हम मन रूपी सिंहासन पर बैठते हैं तो हमारा जी चाहता है कि हम आदेश दें, हुक्म चलाएं। उस समय हम अपने को बाधाओं का दास बना लेते हैं और परमेश्वर की कृपा दृष्टि के मोहताज हो जाते हैं। हम निरन्तर बाधाओं की शिकायत करते हैं और रोते तथा अपनी दुर्बलताओं को मानते हैं। परन्तु ज्यों ही हमको परमेश्वर की दिव्य शक्ति का बोध होता है तो तुरन्त समझ लेते हैं कि मैं तो परमेश्वर का बनाया हुआ सर्वश्रेष्ठ प्राणी हूँ, फिर आपको बाधाओं की सेना भी तुच्छ प्रतीत होने लगती है। इसलिए नीतिवचन में राजा सुलेमान ने कहा, है कि 'तू अपनी समझ का सहारा न लेना वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना, उसी को स्मरण करके सब काम करना।' नववर्ष भी हमें यह सिखाता है कि पिछले बीते समय को त्यागकर आने वाले समय में परमेश्वर का स्मरण करता चल। यही तेरे उद्धार का मार्ग है, परमेश्वर हमारी अगुवायी करे।

— एस.बी. सैमुअल, केन्द्रीय विद्यालय, आगरा

Republic Day Musings!

On January 26th we will be celebrating the 69th Republic Day. A republic is a country where the power is held by people through their elected representatives. Thus, the people are ultimate authority. India is a sovereign, socialist, secular and democratic republic with a parliamentary system of government. The Republic is governed in terms of the constitution of India which was adopted by the Constituent Assembly on 26th November 1949 and came into force on 26 January 1950. The Constitution secures to all citizens social, economic and political justice; liberty of thought, expression, belief, faith and worship; equality of status and of opportunity and fraternity assuring the dignity of the individual and unity and integrity of the Nation. Indian Constitution is considered to be one of the best in the world. What is frightening me is the outright violation of the rights enshrined in our Constitution.

In a country like India with diversified culture, religions and beliefs the unity and integrity of the Nation can only be preserved with fraternity and brotherhood. As a regular reader of newspapers, other periodicals and keen observer of what is happening in our country, I can say that, of late, a series of happening that jeopardize the very idea of India have been taking place. Today a person is judged by what he wears, eats, watches, reads and thinks rather than his intrinsic values and educational assets.

There is ample evidence over the last few years that things were in a state of ferment. Concerns are being voiced by members of public, civil society groups, academic experts and think tanks about the flagrant violations of the fundamental rights of the people, which are not aberrations but part of the hidden agenda being implemented.

Attacks on Dalits, Christian educational institutions and places of worship, people holding different opinions and lynching of citizens having different food habits, have become the order of the day. Elected leaders are making objectionable and incendiary speeches with impunity to gain political mileage. Premier educational institutions of the country are not spared either. Fringe elements try to impose their monolithic idea in those institutions. Dissenting voices have been stifled and people with divergent opinions are eliminated or branded as anti-national and unpatriotic.

The unprecedented turmoil in the judiciary is a development that has exposed the rift in the top echelons. The accusations made by the four sitting judges are as good as saying that Benches can be fixed or bought. People who are behind all these problems do not like to debate or discuss anything and nationalism is used as an excuse to murder individuality, multiplicity and pluralism. Dislodging dissent by annihilation is undemocratic.

No freedom can exist without dissent. A dissenting voice is essential for the advancement and progress of society. A dissenter should be free to express his views vigorously without any fear. Strengthening of democracy can be attained by dissenting voices.

It is high time that right thinking citizens to come together and preserve and protect the heterogeneous and composite culture and the democratic fabric of Indian society. Only then we can have a strong India "Where the mind is held without fear and where world has not been broken up into fragments by narrow domestic walls."

Dr. Antony A.P.

ये कैसा गणतंत्र है?

26 जनवरी सन् 1950 को भारत को पूर्ण स्वराज्य प्राप्त हुआ। देश गणतन्त्र हुआ। सैंकड़ों वर्षों की गुलामी के बाद देशवासियों ने आजादी का खुला आसमान देखा... देश अपना... लोग अपने... धरती अपनी... आसमाँ अपना... लेकिन अपनी ही खुशियों को हमने अपने ही हाथों बर्बाद कर लिया।

गणतन्त्र का अर्थ एक ऐसी व्यवस्था से है, जिसमें प्रत्येक गण का आदर होता है जहाँ हर एक की स्वतंत्रता, समानता और सामाजिकता का न्याय होता है। एक गणतंत्र राष्ट्र का प्रत्येक जन अपने आपको देश के मापदण्डों के अनुसार शासित करता है। लोकतन्त्र में जनता भाईचारे और सहचर्य का जीवन जीना चाहती है। सामूहिक अनुभूति, दुखदर्द, खुशहाली और समृद्धि यहाँ तक कि देश में होने वाली हर हलचल पर सामूहिक रूप से प्रभावित होती है। गणतन्त्र देश का प्रत्येक नागरिक स्वतन्त्र है, उसे समान अवसर और अधिकार प्राप्त हैं। ईमानदारी से सोचें तो क्या वास्तव में ऐसा है? क्या भारत की सम्पूर्ण जनता तन, मन, धन से एक होकर भारत को मजबूती प्रदान कर रही है?

सच तो यह है कि गणतन्त्र के 63वें वर्ष में प्रवेश करते हुए जनता उतनी उत्साहित नहीं है। आज समाज में चारों ओर एक दूसरे के बीच गहरी खाई नजर आती है। हर नागरिक स्वार्थ और संकीर्णता में जकड़ा हुआ है। नैतिकता का कहीं नाम नहीं है। धर्म, साम्प्रदायिकता, भाषा, जातिवाद, लोभ, षडयंत्र का विष स्वतंत्रता की बयार में इतना फैल चुका है कि दम घुटने लगा है।

संविधान में लिखा है लोकतन्त्र जनता का जनता के द्वारा, जनता के हित में चलाया जाने वाला तन्त्र है। लेकिन अफसोस। आज सचमुच जनता से 'तन्त्र' का कोई सरोकार नहीं है। 'गण' और 'तन्त्र' का मात्र चुनावों तक ही नाता है। 'एक दिन का सुल्तान यानि मतदाता फिर से अगले चुनाव आने तक समस्याओं के मंझधार में फंसा जूझता ही रहता है। आज भी 'तन्त्र' (शासन) की 'गण' (जनता) से दूरी बनी हुई है। ये कैसा तन्त्र? और कैसे गण? क्यों इसे ही 'गणतन्त्र' कहते हैं?

यह सटीक सत्य है कि लोकतन्त्र में लोक कल्याणकारी सभी सिद्धान्त होते हैं। पर कितना लोक कल्याण होता है यह किसी से छिपा नहीं है। प्रत्येक नागरिक इसी विश्वास में जी रहा है कि हमारा तन्त्र समाज, राष्ट्र, दलित, शोषित, पीड़ित, निर्धन के प्रति कार्य नहीं तो चिन्तन तो अवश्य करेगा परन्तु आज इसके विपरीत हो रहा है। समाज में चारों ओर शोषण, उत्पीड़न, भ्रष्टाचार, हत्या, लूट, बलात्कार, बेईमानी की प्रवृति बढ़ती जा रही है। शायद हमने आजादी की कीमत को गहराईसे पहचाना ही नहीं। हमने स्वतंत्रता को उद्ण्डता मान लिया है। सैंकड़ों बलिदानियों के योगदान को समझा ही नहीं। तभी तो राष्ट्रीय पर्वों पर मात्र चन्द जोशीले भाषण... प्रतियोगिताएं... सांस्कृतिक देश भक्ति कार्यक्रम... शपथ ग्रहण समारोह... झण्डारोहण... परेड... और कुछ जानी मानी हस्तियों के चित्रों पर माल्यार्पण...। बस हो गया 'गणतन्त्र दिवस' और अगले दिन से फिर वही रवैया... वही धन, बल और पर लिप्सा की राजनीति। जतना में वही कुंठा... तनाव... निराशा... बेरोजगारी और अविश्वास... अविश्वास...।

देश को गणतन्त्र बनाने में डा. भीमराव अम्बेडकर को नमन करने से पहले यह जान लें कि बाबा साहब के सम्मुख देश के ऊँचे से ऊँचे ओहदे प्रस्तुत किये गये थे। उन्हें उच्च न्यायालय के न्यायाधीश का पद भी पेश किया गया था... यहाँ तक उन्हें राष्ट्रपति पद के लिए चुने जाने पर विचार हुआ था **शेष अगले पृष्ठ पर...**

New Beginnings with God

"Old things are passed away behold, all things become new." II Cor 5:17

A New Year brings about new inspirations, dreams and goals for everyone. People can start fresh begin a new chapter forget about the past or perhaps they just wants things to get better. Many people go through their whole life saying that they didn't have a good start in life so that is why, they remain where they are. The mistake that many people make is that they don't seem to be aware that the beginning of their life does not determine their end, never forget when God gives you a new beginning, it starts with an ending.

These past years of pandemic have changed many things it has changed the world, changed the situations, our surroundings, our ways of thinking and to some extent it has changed us also but what has not changed till yet is God's love for us.

1 Pet 1:23 for you have born again but not to a life that will quickly end. Your new life will last forever because it comes from the eternal living word of God. Be thankful to God for giving us this another year and for protecting us in the past years. It's never too late to start a new beginning. The story of the Israelites in the desert after leaving Egypt is a perfect inspiration on new beginning. They were enslaved for years and finally they were to travel and start on a fresh time in their lives and in their history. The exciting part was that God was leading them every step of the way. Therefore, it is imperative that we seek God's favour blessings and protection over any new journeys we begin. We should always be grateful and excited about all the new adventures we will experience in our walk with him.

New beginnings are a great time to start something you've always dreamed about or desired and with God's leading all things are possible.

Prithika Minj, St. Mary's Church, Agra

शेषांश... ये कैसा गणतन्त्र

किन्तु देश हित में उन्होंने ये पद ठुकरा दिए और अथक परिश्रम से संविधान का निर्माण किया। आज उच्च पदों पर पहुँचने के लिए अयोग्य से अयोग्य व्यक्ति भी साजिश भरी स्पर्धा कर रहा है। ऐसे में प्रजातन्त्र, लोकतन्त्र, गणतन्त्र अर्थहीन हो गया है।

ऐसा नहीं है कि गणतन्त्र देश में सारा उत्तरदायित्व नेताओं का ही है। हम जनता की भी गम्भीर जिम्मेदारी है कि, किसी का अहित न करें। जैसा जीवन हम जीना चाहते हैं वैसा ही जीवन जीने का अवसर दूसरों को भी दें। लोकतन्त्र की ताकत देश की ताकत है और देश तभी मजबूत बनेगा जब जनता चरित्रवान होगी। देशवासी ईमानदार होंगे। नेता चाहे किसी भी क्षेत्र के हों उनका कर्तव्य है कि वे देश सेवा की राजनीति करें। धन, बल की राजनीति से दूर रहें। जनप्रतिनिधि और जनता अपने कर्तव्यों का निर्वाह करे। 'गण' अर्थात व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि वह 'तन्त्र' को सुधारे और उसे बनाए।

सन्तोष का विषय है कि बहुत से संगठन, पंथ, समाजसेवी, विचारक, संघी, संस्थाएं देश में समता, एकता, शान्ति व भाईचारा बनाए रखने का भरसक प्रयास कर रही हैं लेकिन यहाँ भी कुछ निजी स्वार्थवश राजनैतिक शक्तियाँ इन लक्ष्यों की प्राप्ति में रुकावटें पैदा कर रही हैं। देश की एकता अखण्डता और सम्पन्नता को दाँव पर लगा रही हैं। आइए हम आज ही संकल्प करें हम स्वयं को सुधारें, अपनी आत्मा को पवित्र रखें, क्रान्ति एक ही जन से शुरु होती है उसके अग्रदूत हम ही बनें। तभी गणतन्त्र सार्थक होगा। **—निशी अगस्टीन, आगरा**

शिकायतों के द्वारा आशीर्वादों का रुकना

प्रभु में प्यारे भाइयों और बहनों, आज हम जीवित परमेश्वर के वचन से एक बहुत ही महत्वपूर्ण वाक्यांश को देखने जा रहे हैं। जो आजकल बहुत से मसीही व्यक्तियों के जीवन में देखने को मिलता है। आज हम बात करेंगे निर्गमन ग्रन्थ से 'शिकायतों के द्वारा आशीर्वादों का रुकना,' पर।

प्रभु मेरे प्यारे भाइयों-बहनों, परमेश्वर का वचन हम सब बहुत अच्छे से जानते हैं। हम यह भी जानते हैं कि निर्गमन ग्रन्थ बाइबल से सम्बन्धित है। अगर हम इसमें देखें तो हमें पता चलता है कि निर्गमन ग्रन्थ में इस्राएलियों को मिस्र से निकालने का वर्णन बताता है और साथ ही साथ यह भी बताता है कि उन्होंने परमेश्वर के कार्यों व परमेश्वर से कैसी-कैसी शिकायतें व विश्वासघात किया तथा शिकायतों के द्वारा ही उनकी 11 दिन की यात्रा 40 वर्ष में बदल गयी।

निर्गमन ग्रन्थ में हम देखते हैं कि इस्राएली इस बात से खुश नहीं थे, कि हम मिस्र की गुलामी से आजाद हो गये हैं। बल्कि वे यहोवा परमेश्वर को बार-बार यह कहकर चिड़ाते रहे और अपमान करते रहे थे, कि हम लोग मिस्र में माँस, लहसुन व प्याज और भर पेट रोटी खाया करते थे। पर अब हम यहाँ मरुस्थल में भूखों मर रहे हैं।

जब प्रभु परमेश्वर ने उनका भुनभुनाना और शिकायतें सुनी तो यहोवा ने मूसा के द्वारा कहलवाया, यह हम निर्गमन 16:8 में देखेंगे।

मूसा ने यह भी कहा ''प्रभु आज शाम तुम्हें खाने के लिए माँस देगा और कल सुबह इच्छा भर रोटी, क्योंकि प्रभु अपने विरुद्ध तुम्हारा भुनभुनाना सुन चुका है।

प्रभु में प्यारे भाइयों-बहनों, आज हम स्वयं भी यह स्थिति अपने घर-परिवारों व आसपास देखते हैं, क्योंकि हम भी इस्राएलियों से कुछ कम नहीं हैं। हम भी ईश्वर को सदा शिकायतों और माँगने के अलावा और कुछ नहीं करते हैं।

हम सब अपनी-अपनी जरूरतें ईश्वर के सामने रखते हैं। हो जाए तो ठीक, नहीं तो ईश्वर से शिकायत कर करके और भुनभुनाकर इस्राएली बन जाते हैं और जो आशीर्वाद हमें समय पर यहोवा से मिलने चाहिए हम उन आशीर्वादों को 40 वर्ष पीछे ढकेल देते हैं। इस प्रकार हमें 11 दिन में मिलने वाले आशीर्वाद 40 वर्षों के बाद मिलते हैं और यह भी पता नहीं कि 40 वर्षों के बाद उन आशीर्वादों को देखने के लिए कौन जीवित रहेगा।

प्रभु में प्यारे भाइयों-बहनों, ईश्वर की इच्छा और परीक्षा पर खरे उतरने के लिए प्रभु परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको हर एक चीज में मजबूत व दृढ़ रहने की शक्ति प्रदान करे।

अगर प्रभु से आपकी कोई आशा है तो वो जरूर पूरी होगी। संयम रखें, भुनभुनाने व कुढ़ने से कुछ नहीं होगा। क्योंकि पवित्र शास्त्र कहता है- ''धन्य हैं वे जो यहोवा की बाट जोहते हैं।''

हम देखते हैं, परमेश्वर ने मरूस्थल में इस्राएलियों को पेट भरकर रोटी और माँस प्रदान किया। लेकिन गणना ग्रन्थ 11:1 में हम पढ़ेंगे तो हमें पता चलेगा कि इस्राएली फिर से अच्छे खाने के लिए ईश्वर पर भुनभुनाने लगे और फिर से कुढ़ने लगे जिससे ईश्वर का कोप उन पर भड़क उठा।

—नरेन्द्र मैसी, सेंट मेरीज़ चर्च, आगरा

Is God Really Silent?

We all entered the New Year 2022 with new hopes and new resolutions for our growth. At the very start itself we heard about lot of deaths around the world. In every mind the question arises which only God can give the answer. "IS GOD REALLY SILENT?" God really is not silent rather have more task to accomplish He is more busy in loving us. He is near us.

He begs our friendship; if we wander away from Him, He runs after us in the thorns and brambles; if we stray from home; He awaits us till we come back; and when we do, He's overflowing with tenderness and just can't do enough to celebrate our return. Well then, if we've never met Him, whose fault is it? His or ours? God can be forgotten, repudiated, abandoned and betrayed, but He's always and forever a Savior, a faithful friend, a father. He can't change. A son/daughter may stop being a son/daughter, but the father can never stop being a father.

Man's hunger for God is nothing compared to God's hunger for man; in fact He arranges them. God's no more ceased being Revelation than He's ceased being Love. He didn't love us just once, incidentally, two thousand years ago.

Love must express and communicate itself. That's its nature, When people begin to love one another, they start telling everything that's happened to them, every detail of their daily life; they "reveal" themselves to each other, unbosom themselves and exchange confidences. God continually reaches out toward us to share secrets, we continually refuse to hear. It is He who wants to manifest himself, and we who are too flighty, mistrustful, too hostile, too preoccupied, we obstinately resist God; saying that we have more work than Him. When we run around the world only for the money and the betterment of our selves where do we keep God in our lives? We all panting and puffing under a burden, that's unbearable because we've taken it on ourselves without authorization.

Once more, God must become God for us; regain His proper place and His rights. Put whole trust in him and be always a child of God. Prayer alone can wear down frightful resistance to God. Praying is exposing ourselves to His, influence, placing ourselves under his command, giving him at last, time and opportunity to entrust himself and his secrets to us, as He's planned from eternity.

We have prayer and worship in the churches, why can't we spare little time for the Lord? We can, He is always waiting for us just go and receive blessings for your life and abide in his love. The closer we are to God, the safer we will be. **- Sr. Shalini, Satyaseva Sister, Agra**

DATES TO REMEMBER

JANUARY

03 B.D.Fr. Gregory Tharayil
19 B.D.Fr. John Roshan Pereira
19 B.D. Fr. Thomas K.K.
24 B.D.Fr. Peter Parkhe
27 B.D.Fr. Preas Antony
30 B.D.Fr. Jipson Palatty

आओ हम प्रेरित बनें

वर्ष 2021-2023 काथलिक कलीसिया के इतिहास में धर्मसभा के लिए स्वर्णिम अवसरों में लिखा जायेगा। संत पिता फ्रांसिस ने कलीसिया के सभी विश्वासियों को इसमें शामिल कर सर्व-सहभागिता दिलाने की अनूठी पेशकश की है।

अब तक आयोजित धर्मसभाओं में केवल संत पिता, कार्डिनल्स, आर्चबिशप, बिशप, पुरोहितों एवं धर्म भाई-बहनों की सहभागिता ही दिखाई देती थी। कुछ ही धर्मसभाओं में विश्वासियों की सहभागिता दिखायी दी है।

धर्म संसद की संरचना एक पिरामिड के समान होती थी, यानि पदानुक्रम जिसका जैसा पद उसी क्रम से तालिका में स्थान होता था।

धर्मसभा 2021-2023 में पोप फ्रांसिस ने पिरामिड का स्वरूप बदलकर एक चक्र के रूप में किया है, अर्थात् वृत्ताकार घेरे में सभी को समान रूप से प्रभु येसु का शिष्य समझा है, चाहे वह आम विश्वासी हो अथवा कलीसिया का कोई धर्माधिकारी। सभी का केन्द्र बिन्दु प्रभु येसु ही है।

द्वितीय वाटिकन सभा के बाद पोप पौलुस छठवें ने जिन्होंने धर्मसभा आयोजित की थी, उसके उपरान्त (1967 के बाद) 16 सामान्य धर्म सभाएं, 3 असाधारण धर्म सभाएं एवं 11 विशेष धर्मसभाएं आयोजित की जा चुकी हैं।

सिनड 2021-2023 में विश्वासियों को व्यापक स्तर पर शामिल करने की क्या जरूरत महसूस हुई होगी या फिर संत पिता फ्रांसिस के मन में क्या चल रहा होगा इस आधुनिक कम्प्यूटर, इण्टरनेट, फेसबुक एवं मोबाइल के युग में?

इस आधुनिकता की अंधी दौड़ में सबके मन मस्तिष्क में शैतान ने बहुत कचरा भर दिया है। इससे अछूते नौजवान भी नहीं है। जब उन्हें अपनी बुलाहट पहचान कर समर्पित जीवन जीने की राह चुननी चाहिए और काथलिक समाज के अगुवा बनकर प्रभु का सुसमाचार सुनाना चाहिए।

वैश्विक स्तर पर काथलिक कलीसिया के प्रति लोगों का झुकाव या रूझान कुछ कम जरूर हुआ है और अपने देश भारत के साथ-साथ अन्य देशों में भी नई-नई मिनिस्ट्रीज़ (सेवाकार्यों) के आगाज ने अनेक प्रान्तों को येसुमय बना दिया है।

हमारी काथलिक कलीसिया में कहाँ कुछ कभी महसूस होती है और हमारी कलीसियाएं एवं विश्वासी स्वयं को कहाँ खड़ा पाते हैं।

प्रभु के इस कथन पर हम मनन करें 'बहुत से जो लोग अगले हैं, पिछले हो जायेंगे और जो पिछले हैं अगले हो जायेंगे।'' (मारकुस 10:31)

पिछले कुछ 30-35 सालों से काथलिक कलीसिया से अटूट विश्वासियों का पलायन, उसकी शिक्षा या नीतियों पर विश्वास न करना या फिर दूसरी कलीसियाओं को अंगीकार करना या फिर अपने पुराने स्वभाव में लौटना इसके अनेक ज्वलन्त उदाहरण और कारण हैं, जिन पर हमें ध्यान करना होगा। भावी कलीसिया की मजबूत नींव के लिए यह बहुत गम्भीर विषय है। हम सभी इस बात को बहुत अच्छी तरह से जानते हैं।

काथलिक कलीसिया को साकार रूप देने के लिए गृहस्थ लोगों की एक विशेष बुलाहट है। वैसे तो धर्मप्रान्तीय कलीसिया में हरेक युवा, स्त्री-पुरुष ने प्रभु येसु नाम की अलख जगायी है। इस मुहिम में विवाहित स्त्री पुरुषों की विशेष बुलाहट व आवश्यकता है, जो अपने परिवार की देखभाल के साथ-साथ कलीसिया से अलग विश्वासियों

को ढूंढ़कर और उनकी देखभाल करने विशेष आवश्यकता है।

आज समय की मांग है कि जब युवाओं का रूझान समर्पित जीने के प्रति कम हुआ है तो उनको आगे लाया जाये। प्रभु भी तो यही चाहते हैं। प्रभु येसु कहते हैं, ''फसल तो बहुत है लेकिन मजदूर कम हैं।'' इसमें चार चाँद लग जायेंगे।

यू-ट्यूब, फेसबुक और सभी सोशल मीडिया पर स्त्री-पुरुष, नौजवान प्रभु को आदर देकर उसकी महिमा और जय-जयकार कर रहे हैं।

क्या हम काथलिक विश्वासी अपने आपको कमतर आंकते हैं? या फिर यह सोचते हैं कि प्रभु के सुसमाचार के प्रचार का काम तो केवल धर्मभाई-बहनों और पुरोहितों का है। क्या हम सभी व्यक्ति बपतिस्मा प्राप्त कर प्रभु येसु के सुसमाचार के प्रचारक नहीं बने हैं?

इसके बावजूद भी आज काथलिक कलीसिया में हजारों विश्वासी ऐसे हैं, जो पुरोहितों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रहे हैं। यह अच्छी बात है, परन्तु विवाहित लोगों को भी समर्पित जीवन जीने की आवश्यकता है। अब सवाल उठता है यदि विवाहित स्त्री-पुरुष पूर्ण रूपेण प्रभु के नाम का प्रचार करेंगे तो हमारा परिवार कैसे चलेगा? दैनिक आवश्यकताओं हेतु धन कहाँ से आयेगा? आप लोगों का विचार भी ऐसा हो सकता है। आज हमारे धर्मप्रान्त के जो पुरोहित हैं, क्या धर्मप्रान्त उनकी दैनिक आवश्यकताओं का ध्यान नहीं रख रहा है? आप लोगों से मेरा व्यक्तिगत निवेदन है कि प्रभु का कार्य करने के लिए आगे आइए। इस पुनीत कार्य में हाथ बंटाइए जिससे कि प्रभु का यह वचन आत्मसात् हो सके, ''जाओ, संसार के कोने-कोने में जाकर मेरा प्रचार करो। मैं ही जीवन्त ईश्वर हूँ। रक्षा, देखभाल, सुरक्षा देने वाला ईश्वर हूँ।''

प्रेरितों के समय में भी लोग प्रभु येसु के नाम पर बपतिस्मा ग्रहण कर रहे थे और प्रभु को अपना मुक्तिदाता अंगीकार कर रहे थे। गाँव-गाँव, शहर-शहर में प्रभु के लोग शिष्य बन रहे थे।

संत पौलुस कहते हैं, ''धिक्कार मुझे, यदि मैं सुसमाचार का प्रचार न करूँ,'' क्यों न हम इस पुनीत कार्य में आगे आयें।

हमें ज्ञात है कि वर्तमान समय में समर्पित जीवन जीने के प्रति स्त्री-पुरुषों का रूझान कम हुआ है। क्यों न हम उनमें जागृति पैदा करें जिससे कि वे आगे आएं। मुझे पूरा विश्वास है कि धर्मप्रान्त में आज 70-80 पुरोहित जो प्रभु की दाखबारी में कार्य कर रहे हैं, आने वाले समय में उनकी संख्या 400-500 के पार चली जायेगी।

आज आवश्यकता है कि अधिक से अधिक लोग प्रभु के साथ चलें। दूसरों को भी साथ लेकर चलें क्योंकि कोविड-19 ने संसार की दिशा और दशा दोनों बदल कर रख दी हैं। अब समय है अनेक आत्माओं को बचाने में अपने व्यक्तिगत जीवन के साथ-साथ दूसरों को साथ लाने का, जिससे कि 'वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना साकार हो सके। अब समय है अपनी खोई हुई भेड़ों को अपने झुण्ड में वापिस लाने का, उन्हें ढूँढने का जिससे कि कलीसिया का प्रत्येक विश्वासी एक साथ यात्रा करे। यही सिनड 2021-2023 में संत पिता फ्रांसिस चाहते हैं। आइये हम संत पिता फ्रांसिस के सपनों को साकार करें। एक साथ चलें, एक साथ मिलकर यात्रा करें तब जरूर सिनोडल चर्च बन पायेगा।

सुसमाचार की खातिर अपने धर्मप्रान्त के सभी स्त्री पुरुष इस पुनीत कार्य हेतु आगे आयें और सुसमाचार प्रचार की बुलाहट को पहचानें। तभी नबी इसायस का कथन पूरा होगा, ''यह मेरा सेवक है, इसे मैंने चुना है।''

यदि हमें प्रेरितों जैसे कार्य करना है स्तोत्र ग्रंथ पर विश्वास कर आगे बढ़ना होगा- ''चाहे अंधेरी घाटी होकर जाना पड़े, मुझे किसी अनिष्ट की आशंका नहीं क्योंकि तू मेरे साथ रहता है। मुझे तेरी लाठी, तेरे डण्डे पर भरोसा है।'' (स्तोत्र ग्रन्थ 23:4)। **- मोहनसिंह जैतवाल**

An Open Letter to P.M. Modi by Margaret Alva

Dear Prime Minister,

On New Year's Eve 2022.

I write to you, the Leader of our great Democratic. Secular, Socialist Republic of India, governed by a Constitution which enshrines the fundamental rights and freedoms of Indian citizens, irrespective of caste, colour, race or creed, as a senior concerned citizen who has served my country for 50 years in various capacities.

You are a leader respected nationally and internationally. You travel around the world, calling on world leaders, including His Holiness the Pope, in Rome, proclaiming that India is a free democratic secular state. Your speeches and statements have been praised and extensively reported on, by the global media. Unfortunately, the reality on the ground here, presents a stark, contrast to the image you project of India to the global community, especially in the context of minority rights and secularism.

Mr. Prime Minister, across India, highly organised and militant right wing extremist groups are terrorising, attacking and killing innocent citizens in the name of religion. I am appalled at the recent, widely reported statements, made by some religious leaders calling for genocide, of non-Hindus, in order to create a Hindu Rashtra. What is even more shocking, is that there is no response or action either by your Central Government, or the State Government that's controlled by the BJP, of which you are the undisputed leader, or the local administration, to crack down firmly on this virulent, toxic, hate speech, designed to create insecurity and fear amongst millions of minorities, who live here in the country.

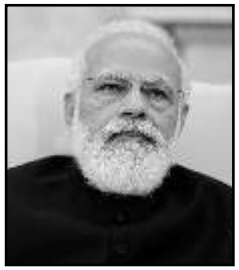

From the early days of our freedom struggle, Muslims, Sikhs and Christians and indeed those from many other religious sects and denominations have fought shoulder to shoulder with our Hindu brothers and sisters, to win our freedom and defend our motherland. My parents-in-law, the late Joachim and Violet Alva, were freedom fighters who went to jail and became the first couple in India's Parliament, she also becoming Parliament's first woman presiding officer. There are today thousands of minorities serving the nation in all walks of life, in all parts of the country. Are we now to be treated as second class citizens?

Mr. Prime Minister, how can you close your eyes and remain silent when atrocities on India's minorities are mounting? Your silence Mr. Prime Minister, is misread as tacit approval and encouragement to the ever increasing violence and intimidation India's minorities are being subjected to. When will you speak up and put a stop to this madness and violence?

My home state of Karnataka, where I was born and brought up, has boasted of a peaceful inclusive environment, that has drawn people from all over the world. This Christmas, the State BJP government has gifted us the draconian "The Karnataka Protection of Right of Freedom of Religion Bill" in "recognition" of our services, which has provisions that have been previously struck down by courts and are clearly violative of the Indian Constitution. It makes all minorities, our institutions, practices, services and charities

suspect. Personal liberties of privacy, of religion, of marriage, and decision making, are taken away, and the state becomes the arbiter of our personal lives, making us subject to probes, charges, and jail by the state and its officials, who will interpret the provisions of the law and imprison us without trial.

We Christians are a disciplined, non-violent, service oriented community. If we were involved in mass conversions, why is our number under 3%? 200 years of rule by Christian colonial powers and work by so called "missionaries involved in forced conversions" should have shown in our numbers, which have been declining. Why then this false propaganda and violence against us? The work of Mother Teresa of Calcutta for the poor, the sick and the abandoned all over the world was hailed by Atal Bihari Vajpayeeji and Advaniji and has brought honour and glory to India. Even she and her sisters have not been spared, with their funds frozen. Why?

Is this the India our freedom fighters fought for? Our Constitution makers sought to create? And the Father of the nation dreamt of, when he beseeched his countrymen to "wipe every tear from every eye"? Is this the India we have struggled over 70 years, to build?

Rulers and Regimes down the ages have tried to suppress and kill - Christianity but it has survived and reached all comers of the earth.

It cannot be wiped out in India. We are part of this nation's fabric. Indian blood flows in our veins and we are patriotic citizens who have, and will continue to serve our people and help build our motherland. History shows that Christianity has thrived and spread on the blood of martyrs. Christ taught us to love our enemies, do good to those who would harm us and forgive those who would kill us. This we will do, as we pray each day "father forgive them for they know not what they do".

May Jesus Christ bless you my Prime Minister and guide you in your ways. May the love, joy and peace of Christmas remain with us all through the New Year.

Your's sincerely,
MARGARET ALVA
(Former Governor & Union Minister)

अपनी बलि क्यों नहीं देते?

यूनान के एक प्राचीन मंदिर में प्रतिवर्ष उत्सव का आयोजन किया जाता था। असंख्य श्रद्धालु उसमें शामिल होते थे। उन दिनों प्रमुख दार्शनिक प्लेटो की ख्याति चहुंओर फैली थी। वह आडंबरों से दूर रहकर सात्विक जीवन बिताने की प्रेरणा दिया करते थे। लोग उनके पास पहुंचकर धर्म और समाज-संबंधी जिज्ञासाओं को समाधान पाया करते थे। उत्सव के आयोजकों ने एक बार प्लेटो को भी समारोह में आमंत्रित किया। प्लेटो सहज भाव से महोत्सव में जा पहुंचे। यूनान में उन दिनों देव प्रतिमा के समक्ष पशुबलि जैसी कुप्रथा प्रचलित थी। प्लेटो ने पहली बार देखा कि अपने को देवता का भक्त बताने वाले एक व्यक्ति ने निरीह पशु को मूर्ति के सामने खड़ा किया और तलवार से उसका सिर उड़ा दिया। निरीह पशु को तड़पते देखकर प्लेटो का हृदय हाहाकार कर उठा। वह कुर्सी से उठे और सीधे मूर्ति के सामने जा पहुंचे। दूसरे पशु की बलि देने को तत्पर अंधविश्वासी व्यक्ति तथा उपस्थित जनों से प्लेटो ने कहा, 'देवता इन निरीह और मूक पशुओं की बलि से यदि प्रसन्न होते हैं, तो क्यों न आप और हम अपनी बलि देकर देवता को हमेशा के लिए तृप्त कर दें।' उनके ये शब्द सुनकर सब कांप उठे। पशुबलि देने के लिए आया व्यक्ति भाग गया। उसी दिन से वहां पशुबलि बंद हो गई।

18 जनवरी, 2022 (अमर उजाला, आगरा)

In Service of Man and God

(Mother Teresa passed away 25 years ago. The Missionaries of Charity carry on, caring for the poor and outcasts across the world.)

I was far away from Delhi when news trickled in that the government had not renewed FCRA permission to the Missionaries of Charity, the organisation that Mother Teresa founded in 1950. It was the year that our Constitution was promulgated and she was amongst the first foreigners to become an Indian citizen.

Associated with Mother Teresa for the last 23 years of her life, and with the MC sisters for over four decades, the refusal of FCRA permission came to me as a surprise, but I believed it was the result as is often the case, of accounting errors, which would be corrected. And so it happened. The sisters were able to explain the discrepancies to the concerned authorities and permission was renewed.

2022 awakened to the 25th year of Mother Teresa's passing away, in her beloved Kolkata. For me, it was also an occasion to recount a little of my association with her. We know where she started, a lone presence on Kolkata's streets with no money, no helper and no companion. By the time she passed away, she had created, one small step at a time, the presence of her Order in 123 countries. Together, with her band of 4,000 sisters and brothers, theirs would remain a unique brand of faith and compassion, reaching out to alleviate destitution, loneliness, hunger and disease, bringing hope and relief to millions of the abandoned, homeless, dying and leprosy outcasts, irrespective of their country, faith, or denomination.

Although she remained fiercely Catholic, her brand of religion was not exclusive. Convinced that each person she ministered to was Christ in suffering, she reached out to people of all faiths. Hers was not the 19th-century brand of imperial evangelism. Unlike most in the Church, she understood the environment in which she lived and worked. In the course of writing my biography, I once asked Jyoti Basu, that indomitable chief minister of West Bengal, what he, as a Communist and atheist could possibly have in common with Mother Teresa, for whom God was everything. With a smile, he replied, "We both share a love for the poor."

With such a long association and so many memories, I can at best present a few vignettes of an arduous yet joyful life that was ordained for her. I vividly recall my first visit with her to a huge leprosy settlement not far from Kolkata. It was a very moving experience to see her surrounded by hundreds of inmates, many with no arms or legs, all reaching out to hug or touch her. "Ma", as they called her, had made them feel needed by giving them the important task of weaving the saris that are worn by the MC sisters worldwide.

During her visits to Delhi, where she had "homes", I would help steer her through our labyrinthine bureaucracy. Overtime, I became familiar with the work of the MC. The Shishu Bhawans were crammed with abandoned infants, dressed in cheerful clothes, stitched by the sisters or volunteers; the "house" at Majnu Ka Tila for abandoned elderly destitute persons; the home for disabled children in South Delhi, many

suffering from Down Syndrome and cared for in their cots.

It was here that my daughters and I first met Kusum, then a child of six. Two things struck me at once. The first was that she could not stand, and the second was her infectious smile. Whenever I visited, this little girl always greeted me with a smile. As she could only crawl, the sisters, helpers and volunteers fed her, bathed her, dressed her in fresh clothes everyday, and carried her to the toilet every time she needed to go. They changed her clothes each time she soiled them.

Painstakingly, she learnt to say "hello" to me and one day, to my delight added "uncle" to complete the little sentence. Kusum was found begging on a street. On the afternoon the sisters found her, it was pouring. The drenched child had a wracking cough. Unable to find a parent or guardian, they customarily reported the matter to the local police. After her condition stabilised in a nearby hospital, they brought her to their "ashram" to join about 60 children with physical and mental problems. Doctors had opined that her legs and arms had been broken, perhaps deliberately. When I once asked her who had done this to her, she burst into tears. It was the only time she cried. For the rest of the time, Kusum's smile would invariably reach her eyes. When she died at the age of 18, the sisters cremated her body at the nearby cremation ground.

When I asked Mother Teresa how she and her mission could care for hundreds of thousands of destitute persons, and what made this possible, she explained to me simply but meaningfully. "You can, at best look after a few loved ones in your family. My sisters and I can look after everyone, because for us they are all God". So, the leprosy-affected man chained by his brothers in a hut, the infant left under a truck and saved just in time from prowling dogs, the woman dumped on a rubbish heap by her own son" and left to die because he had now secured her property, were manifestations of her God in suffering.

Perhaps the most succinct summing up of Mother Teresa's life and work was made by the Chairman of the Nobel Peace Prize Committee, John Sannes. In his speech at the Nobel prize ceremony in Oslo in 1979, he said: "The hallmark of her work has been respected for the individual and the individual's worth and dignity. The loneliest and the most wretched, the dying destitute, the abandoned lepers have all been received by her and her sisters with warm compassioa devoid of con-descensioa based on her reverence for Christ in man... This is the life of Mother Teresa and her sisters - a life of strict poverty and long days and nights of toil, a life that affords little room for other joys but the most precious."

The writer is former Chief Election Commissioner of India.

NAVIN B. CHAWLA

The Indian Express, Delhi (14.01.2022)

सद्भावना, आगरा इकाई

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी की पुण्य तिथि पर **विश्व शान्ति** हेतु आयोजित

सर्वधर्म प्रार्थना सभा एवं विचार गोष्ठी

में आपका हार्दिक स्वागत करती है।

विषय: कोविड-19 महामारी के समय में सद्भावना

दिन एवं दिनांक: रविवार, 30 जनवरी 2022

समय: सायं 4 बजे से 6 बजे तक

स्थान: सेंट पीटर्स कॉलेज कल्चरल हॉल

वज़ीरपुरा रोड, आगरा

In Bad Faith

With their foreign funding cut off, Missionaries of Chairty will have to abandon the poor. Will the Hindutva brigade take up their work?

NOW THAT THE Ministry of Home Affairs has finally decided to cut off foreign funding to Mother Teresa's Missionaries of Charity, this international order of nuns will have to stop its care of the poorest of the poor. What was surprising is that it took the government more time than expected to concoct a plausible story to justify its action. A couple of the accused in the Bhima Koregaon case say it took a couple of years to fix their computers in order to rope them in. It should have been much, much easier to foist false cases on unsuspecting Catholic nuns whose only mission in life is to spread love and compassion and whose knowledge of worldly affairs is confined to their work for the poorest of the poor.

A centre run by them in Gujarat for destitute girls was visited by the government's minions. They found the girls "being indoctrinated in Christian beliefs and forced to attend Christian prayer services". These are charges that could have been made much earlier if they were based on truth. But since they are obviously not true, it was only around Christmas Day of 2021 that the revelations were announced.

A concerted attack on Christian schools and places of worship in the states ruled by the BJP has been mounted in the past two or three months. Is it to intimidate them to vote for the ruling dispensation? I doubt it. Christians can make some small difference in a small state like Goa but surely not in Uttar Pradesh or even in Punjab or Uttarakhand.

So what is it that is getting the Sangh Parivar all agog with excitement all of a sudden? Honestly, I cannot figure it out. If it is "conversions", that is an old horse that has been flogged almost to death. The cognoscente knows well that there are no "forced" conversions. That is out of the question in today's day and age, especially under today's political dispensation. Even when "Soft Hindutva" ruled, it would not have been tolerated.

Mass conversions would attract attention and consternation. That, too, is not happening. The last mass conversions that were reported were of Scheduled Caste Hindus to Buddhism. That was some decades ago in Maharashtra, home to their icon, Babasaheb Ambedkar.

The only plausible explanation I can offer is the Sangh Parivar's drumming up of pure prejudices against a small community that has nowhere to go when threatened or bullied. The "Christian" countries are not going to accept them, as religion is not an emotive issue with them like it is in South Asia or in the Islamic nations of the Middle East or Southeast Asia. Muslims, who constituted the first and the main target of the forces of Hindutva, were advised to go to Pakistan. Which country will be assigned to the poor Christians?

If BJP MP Tejasvi Surya had his way, the Christians would not be required to leave. A better solution hath he in a statement he later withdrew. They would have to revert to the religion of their forefathers by undergoing the purifying ceremonies of "ghar wapsi". Hinduism has never existed without the allotted castes. What caste would be assigned to the prodigals? I suppose Surya would

decide that delicate issue also.

But let us revert to the government's refusal to renew the FCRA licence of the revered Mother's Missionaries of Charity. Without foreign aid, the nuns will have to abandon the poorest of the poor to an uncertain fate. Unless, of course, the Hindutva brigade's softer side steps in and takes up the work from the Sisters. The love and compassion that guides those good women may go missing but at the very least the destitute will escape death by starvation. And that would be the least we should expect from these soldiers of the "New India". At present, the only job entrusted to them is the lynching of Muslim "beef traders" and violence against Christian "proselytisers". Let them get accustomed to busying themselves with positive work, simultaneously.

The other aspect of this sad affair that should bother us is the habit the Modi-Shah government has formed of twisting facts to suit its ideological agenda. In the case of Mother Teresa's order of nuns, I am witness to the fact that the Mother made it an article of faith to ensure that parents who were accepted as guardians or foster parents were of the same religious denomination as the child who was l put up for adoption. In Romania, where I . Witnessed the process, the Orthodox , Christians, who were the dominant faction in the land, would not have countenanced orphans being assigned to Catholic foster parents of more affluent countries.

I have mentioned in earlier writings that Mother Teresa inaugurated the reopening of a mosque in Albania at the request of a group of Muslim boys who approached her. She justified her consent to do that by telling me that it gladdened her heart to see a return to God in that atheist country in which her parents were born and lie buried. The country was 70 per cent Muslim before the Communist dictator Enver Hoxha declared it to be officially atheist and closed all mosques and churches for public worship.

In any case, the main objects of Mother's attention, and hence her followers as well, were abandoned babies and the old and feeble men and women left by an indifferent society to fend for themselves on the street in their dying hours. Even if Mother wanted to convert them where was the scope? Allegations of Christian prayers recited at the time of their death, even if true, do not make these poor souls into Christians. That process is time-consuming since the converts have to assimilate Christian beliefs and values and this takes at least a year or so to accomplish.

(The writer, a retired IPS officer, was Mumbai Police Commissioner, and a former Indian Ambassador to Romania.)

- Julio Reibeiro

The Indian Express, Delhi (04.01.2022)

Final Profession

With profound joy and gratitude, we invite you to join us in thanking and praising God, as our beloved daughter Sr. Kiran Toppo, CJ makes her Final Profession.

Sr. Kiran Toppo, CJ

Sunday 30 January, 2022 at 11 a.m.

St. Francis School, Jhansi Cantt.

Seeking your prayers us and blessings, we remain ever grateful,

Mr. Melethius & Mrs. Orelia Toppo & Family

St. Thomas' Church

Shastripuram, Sikandra, Agra

Blessed Devasahayam
The First Indian Layman to be Conferred Sainthood

A Hindu man from Kanyakumari district in Tamil Nadu, who converted to Christianity in the 18th century, is set to become the first Indian layman, to be declared a saint by the Vatican on May 15, 2022. Devasahayam Pillai, who took the name 'Lazarus' in 1745, was first approved for sainthood in February 2020 for "enduring increasing hardships" after he decided to embrace Christianity, the Vatican said.

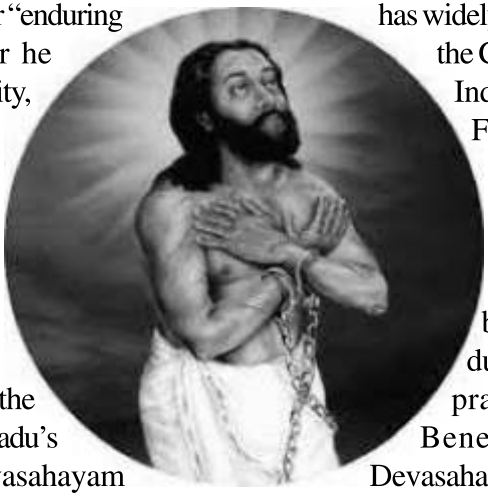

Devasahayam is said to have faced harsh persecution and imprisonment after he decided to convert to Christianity, ultimately resulting in his killing in 1752.

Born on April 23, 1712 in the village of Nattalam in Tamil Nadu's Kanyakumari District, Devasahayam went on to serve in the court of Travancore's Maharaja Marthanda Varma. It was here that he met a Dutch naval commander, who taught him about the Catholic faith.

In 1745, soon after he was baptised, he assumed the name 'Lazarus', meaning 'God is my help'. But he then faced the wrath of the Travancore state, which was against his conversion.

"His conversion did not go well with the heads of his native religion. False charges of treason and espionage were brought against him and he was divested of his post in the royal administration," a note issued by the Vatican in February 2020 read. He was imprisoned and subjected to harsh persecution.

"While preaching, he particularly insisted on the equality of all people, despite caste differences. This aroused the hatred of the higher classes, and he was arrested in 1749," the Vatican stated.

On January 14, 1752, just seven years after he became a Catholic, Devasahayam was shot dead in the Aralvaimozhy forest. Since then, he has widely been considered a martyr by the Catholic community in South India. His body is now at Saint Francis Xavier Cathedral in the Diocese of Kottar.

He was declared Blessed by the Kottar Diocese in 2012, 300 years after his birth. "In remarks that day during the midday 'Angelus' prayer in the Vatican, Pope Benedict XVI recalled Devasahayam as 'faithful layman'. He urged Christians to "join in the joy of the Church in India and pray that the new Blessed may sustain the faith of the Christians of that large and noble country," the note from the Vatican stated.

Devasahayam's ascent to sainthood was not without controversy. In 2017, two former IAS officers wrote to Cardinal Angelo Amato, who was then the head of the Vatican's Congregation for the Causes of Saints, urging them to drop Devasahayam's last name 'Pillai' as it was a caste title. However at the time, the Vatican declined their request.

It was only in February 2020, when the Vatican cleared him for sainthood, that they dropped 'Pillai' from his name, referring to him as 'Blessed Devasahayam'.

Courtesy: Fr. Jemilthan

सेण्ट थॉमस चर्च, सिकन्दरा में प्रथम परमप्रसाद एवं दृढ़ीकरण संस्कार दिये गये

12 नवम्बर। सेण्ट थॉमस चर्च, सिकन्दरा में बच्चों को प्रथम पवित्र परमप्रसाद एवं दृढ़ीकरण संस्कार प्रदान किये गये।

इस पावन अवसर पर धर्माध्यक्ष डॉ. राफी मंजलि की अति पावन एवं शोभनीय उपस्थिति से हम पल्लीवासी आशिषित हुए। बड़ी संख्या में पल्लीवासियों ने उपस्थित होकर स्वामी जी का स्वागत किया। प्रवेश द्वार पर स्वामी जी का टीका एवं माल्यार्पण के साथ पल्ली की महिलाओं ने अपने पारम्परिक गीत व नृत्य द्वारा वेदी तक अगुवाई करते हुए महामहिम का अभिनन्दन किया। पल्ली के 13 सदस्यों ने प्रथम परमप्रसाद एवं 15 ने दृढ़ीकरण संस्कार ग्रहण किया। पल्ली पुरोहित फादर डेनिस डिसूजा के मार्गदर्शन में सेण्ट फ्रांसिस कॉन्वेण्ट की सिस्टर्स ने इन दीक्षार्थियों को धर्मशिक्षा द्वारा तैयार किया। इस शुभ अवसर पर महाधर्माध्यक्ष ने 6 पुरोहितों के साथ मिस्सा बलिदान चढ़ाया। पहले दृढ़ीकर संस्कार और उसके पश्चात प्रथम परमप्रसाद संस्कार दिये गये।

अपने प्रेरणादायक प्रवचन में स्वामी जी ने बच्चों को प्रथम परमप्रसाद एवं दृढ़ीकरण की महत्ता बताते हुए कहा, कि ''प्रथम परमप्रसाद के रूप में आप प्रभु येसु को ग्रहण करेंगे, आज ही प्रभु येसु आपके जीवन में तथा आपके तन-मन में उपस्थित होंगे और आप पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन व पावन संरक्षण में सुरक्षित होंगे।''

मिस्सा के अंत में पल्ली पुरोहित श्रद्धेय फादर डेनिस डिसूजा ने महाधर्माध्यक्ष एवं उपस्थित पुरोहितों, समस्त पल्लीवासियों, बच्चों तथा अभिभावकों को धन्यवाद दिया। इसी श्रृंखला में श्रीमती सेरेफिना शॉ ने पैरिश समिति, गायन मण्डली, सभी धर्मसंघियों, वेदी की सजावट करने व इस दिवस को सफल बनाने में सहयोग देने वाले प्रत्येक व्यक्ति विशेष के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम के अंत में बच्चों ने स्वामी जी के साथ फोटो खिंचवाये और उनका आशीर्वाद ग्रहण किया। बच्चों के अभिभावकों द्वारा जलपान का प्रबन्ध किया गया था, जिसका सबने आनन्द लिया।

श्रीमती मेरी जौन, सिकन्दरा, आगरा

सेंट पैट्रिक्स चर्च प्रांगण में नॉन फार्मल बच्चों के साथ क्रिसमस समारोह मनाया गया

आगरा, 16 दिसम्बर। संत पैट्रिक्स सोशल वर्क सेण्टर, आगरा छावनी में प्रभु येसु का जन्म दिवस नॉन फार्मल बच्चों के साथ बहुत धूमधाम से मनाया गया। आगरा महाधर्मप्रांत के निवर्तमान महाधर्माध्यक्ष डॉ. आल्बर्ट डिसूजा हमारे मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उनके साथ संत पैट्रिक्स चर्च के पल्ली पुरोहित फादर ग्रेगरी थराइल, फादर शिबु कुरियाकोस, सिस्टर विक्टोरिया ऐलेक्स, सिस्टर अंजू मेरी, बहुत-सी कनोशियन्स सिस्टर्स,

एनजीओ (आशियाना महिला समिति) के अध्यक्ष श्री मनोज बल, डॉ. मनु शर्मा, श्री लॉरेन्स मसीह, कु. जिल्लिअन, ले-कनोशियन्स एवं शिक्षिकाएं भी उपस्थित थीं। बच्चों ने विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की गयीं। कैरोल सिंगिंग, डांस, क्रिसमस सन्देश, प्रभु येसु के जन्म पर आधारित एक नाटिका प्रस्तुत की गयी। इस विशेष अवसर पर महाधर्माध्यक्ष डॉ. आल्बर्ट डिसूजा जी ने बच्चों को सरल शब्दों में बताया, कि ''क्रिसमस का अर्थ क्या है। दूसरों के साथ अपनी खुशियां बांटना एवं प्रेम, क्षमा और भाईचारे से रहना और संसार में शांति, आनन्द का सुसमाचार सबके साथ बांटना। यही हम सब का लक्ष्य है।'' ख्रीस्त जयन्ती मनाते हुए बच्चों को विशेष आशीष दी एवं नववर्ष की शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर बच्चों को उपहार दिए गए एवं भोजन कराया गया।

श्रीमती प्रीति राजपूत, आगरा छावनी

फतेहाबाद में क्रिसमस व नववर्ष की धूम

22 दिसम्बर 2021 को सेन्ट जॉन पॉल्स स्कूल, फतेहाबाद (आगरा) में क्रिसमस एवं नववर्ष का पर्व धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ निवर्तमान आर्चबिशप डा. आल्बर्ट डिसूजा एवं विद्यालय के प्रबंधक श्रद्धेय फादर प्रकाश डिसूजा के स्वागत से किया गया। नन्हें-मुन्ने बच्चों ने फूल बरसाकर एवं आरती उतार कर उनका अभिनंदन किया। इसके पश्चात् दीप प्रज्ज्वलन कर प्रभु की प्रार्थना की गई। क्रिसमस क्यों मनाया जाता है और प्रभु ईसा मसीह का अवतरण धरती पर किस प्रकार हुआ, का चित्रण एक नाटक के द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में अनेक नृत्यों एंव गीतों का प्रस्तुतीकरण किया गया। आर्चबिशप डा. आल्बर्ट डिसूजा ने अपने संदेश में कहा, कि ''प्रभु ईसा मसीह संसार को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने इस संसार में आए।'' उन्होंने आर्शीवाद दिया, कि ''यह नया वर्ष हम सभी के लिए खुशियाँ लेकर आए। हम सदैव याद रखें कि सत्य की ताकत दुनिया की सबसे बड़ी ताकत है।'' प्रबन्धक श्रद्धेय फादर प्रकाश डिसूजा ने कहा, कि ''देव तुल्य होना सरल है परंतु सच्चा और अच्छा मनुष्य बनना कठिन है। इसलिए हम सभी को एक अच्छा इंसान बनने का प्रयास करना चाहिए।'' श्रद्धेय फादर सन्तियागो राज एवं सिस्टर प्रतिमा एक्का ने अतिथियों को शॉल एवं स्मृति चिह्न भेंट किए। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। फादर सन्तियागो ने सभी को क्रिसमस एवं नूतन वर्ष की शुभकामनाएँ दीं।

- फादर सान्तियागो राज

Christmas Tree organised by Christian Samaj Seva Society, Agra

Agra, 19 December. Like many previous years, this year, also Christian Samaj Seva Society, Agra organised Christmas tree in loving memeory of its founder late Mr. Michael Silvera for the poor children. This year due to pandemic,

all the field items i.e. games and sports etc. were cancelled, except distribution of food packets. We distributed food packets to fifty children.

Smt. Vatsala Prabhakar, President of Mahila Shanti Seva, Agra Mrs. Simran Upadhyaya, wife of Sri Yogendra Upadhyaya, MLA and all the members of the society were present to grace of the occasion. Next year, God willing we will have a proper celebration with lot of fun and frolic.

- Jacinta Silvera

Christmas celebrated at St. Francis Xavier's Regional Seminary, Agra

Christmas a season of joy and blessings, is the most awaited time for the Christians all over the world and celebrating this great festival in the seminary, is completely a different experience. Consequently, its preparation here at Masih Vidyapeeth (St. Francis Xavier's Regional Seminary), Etmadpur (Agra) began much early i.e. from 20th December as soon as we commenced our Christmas holidays.

On the midnight of 24th December, few brothers of final year philosophy shared their personal spiritual Christmas experience with the whole community. It was then followed by a solemn vigil Mass celebrated by Rev. Fr. Rector and the members of the staff. After the Mass all gathered in front of the crib which was quite beautifully made by the brothers, to adore the new born king by singing carols and greeting one another. The next day i.e. 25th December, the Mass was held in the Orientation Chapel, presided over by Rev. Fr. Stephen (Coordinator) and the staff members. Later, in the evening we had community Adoration followed by a sumptuous Christmas meal.

On 31st December during the Adoration we thanked the Lord for his innumerable blessings and graces, which He bestowed on each one of us during the year 2021. After having burnt the effigy of 2021, we had a solemn thanksgiving holy Eucharistic celebration offered by Rev. Fr. A. Sebastian, our Founder Rector and now a visiting professor.

We began the New Year by Adoring the Lord and seeking his benevolent blessings on each one of us. It was also a remarkable day for us, as on this day the children from Bal Bhavan, Aligarh visited our Seminary along with Rev. Fr. Jose Akkara, some Sisters and two Regent Brothers. They were warmly welcomed by the seminary community and were served tea along with refreshments.

The students of third year conducted some enthralling games for these children in the refectory which was then followed by a rejuvenating program in the seminary auditorium. The children were then served a delicious meal. After a friendly basketball match between the children from Aligarh and our Brothers, all the children were facilitated with a return gift from the seminary. Thus, the picnic for the children of Bal Bhavan, Aligarh successfully culminated with tea and snacks. We thank Rev. Fr. Stany D' Silva for making all the required arrangements. In the evening the students of philosophy began their monthly Re-collection by devotionally participating in the

Feast day Mass of the 'Holy Mother of God' followed by a talk by Rev. Fr. A. Sebastian. The re-collection concluded the next day with the Sacrament of Reconciliation of Benediction.

On the same day at 5:30pm, we had a community Christmas Tree and refreshing get-together. During the gathering we had various friendly competitions viz. Carol singing, Live crib making etc. The celebration came to an end with a sumptuous meal.

Bro. Conrad Clifford Coelho

सेन्ट जॉन पॉल्स स्कूल, फतेहाबाद में क्रिसमस मेले का आयोजन

25 दिसम्बर 2021 को सेन्ट जॉन पॉल्स स्कूल, फतेहाबाद में एक मेले का आयोजन किया गया, जिसका संचालन विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा किया गया। मेले में अनेक दुकानें लगाई गईं, जिनमें गोल गप्पे, भेल पुरी, पकौड़े, विभिन्न खेलकूद एवं झूला प्रमुख रूप से आकर्षण के केन्द्र रहे। अभिभावक, अपने बच्चों, रिश्तेदारों और पड़ोसियों के साथ काफी संख्या में इस मेले को देखने के लिए आए। बच्चों ने खाने-पीने की चीजों के साथ-साथ झूलों का भी आनंद लिया। उनकी खुशी और मस्ती उनके चेहरों से स्पष्ट झलक रही थी। उन्हें प्रधानाचार्य जी के साथ मेला घूमने के साथ-साथ फोटो खिंचवाने का भी अवसर प्राप्त हुआ।

मेला देखने वालों के लिए प्रभु येसु मसीह के जीवन पर आधारित प्रदर्शनी विशेष आकर्षण का केन्द्र रही। इन झाँकियों में प्रभु येसु मसीह के जीवन की घटनाओं को सजीव रूप से प्रदर्शित किया गया। मेले के आयोजन के लिए प्रधानाचार्य श्रद्धेय फादर सन्तियागो राज की सभी लोगों ने भूरी-भूरी प्रशंसा की गई।

धर्माध्यक्षीय पदभार ग्रहण की प्रथम वर्षगाँठ पर विशेष पूजा प्रार्थना समारोह सम्पन्न

आगरा, 7 जनवरी। आगरा महाधर्मप्रांत के महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी मंजलि द्वारा आगरा महाधर्मप्रांत की पीठ-पदभार ग्रहण किये जाने की प्रथम वर्षगाँठ पर नगर के विभिन्न गिरजाघरों व संस्थानों में धन्यवाद की विशेष पूजा प्रार्थना एवं धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किये गये। वजीरपुरा मार्ग स्थित निष्कलंक माता महागिरजाघर में महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी मंजलि ने करीब 10 पुरोहितों के साथ धन्यवाद का पवित्र मिस्सा बलिदान अर्पित किया। श्रीमती स्टेला ने पवित्र मिस्सा की भूमिका बताते हुये सभी विश्वासियों का हार्दिक स्वागत किया।

उपयाजक सचित ने गायन मण्डली का सफलतापूर्वक संचालन किया। महाधर्माध्यक्ष डॉ. मंजलि ने अपने प्रभावशाली प्रवचन में समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार की बीमारियों विशेषकर कुष्ठ रोग के प्रति लोगों को आगाह करते हुए कहा, कि ''शारीरिक कोढ़ से कहीं

बढ़कर है मानसिक और सामाजिक कोढ़, वैमनस्यता और भेदभाव का कोढ़। हमें इन सबसे बचकर रहना चाहिये और इनका दृढ़ता से सामना करना चाहिये।'' समारोह के दौरान श्रद्धेय फादर इग्नेशियस मिराण्डा ने एक शॉल ओढ़ाकर तथा चांसलर फादर भास्कर जेसुराज ने फूलों का गुलदस्ता देकर महाधर्माध्यक्ष का अभिनन्दन किया। इस अवसर पर नि:शुल्क मास्क व सेनिटाइजर वितरित किये गये तथा गरीब व निर्धन वर्ग के छात्र-छात्राओं के लिए छात्रवृत्ति आदि योजनाओं का शुभारम्भ करने पर बल दिया गया।

गतवर्ष महाधर्माध्यक्ष डॉ. आल्बर्ट डिसूजा के सेवा निवृत्त हो जाने से आगरा महाधर्माध्यक्ष का पद रिक्त हो गया था। तभी 63 वर्षीय बिशप राफी मंजलि को पोप फ्रांसिस ने प्रयागराज धर्मप्रांत से स्थानान्तरित कर आगरा का महाधर्माध्यक्ष नियुक्त कर दिया था।

क्रिश्चियन समाज सेवा सोसाइटी के अध्यक्ष श्री डेनिस सिल्वेरा ने महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी मंजलि की प्रथम वर्षगांठ के अवसर पर उन्हें हार्दिक बधाई देते हुए उनके दीर्घायु होने कामना की है।

- डेनिस सिल्वेरा, आगरा

मसीही एकता व आध्यात्मिकता का प्रार्थना अठवारा प्रारम्भ

आगरा 17 जनवरी। मसीही समाज का सामुदायिक प्रार्थना अठवारा सदर स्थिज सेंट जार्जेज़ कथीड्रल, आगरा (महागिरजाघर) में परंपरागत विधि के साथ आरम्भ हो गया। इस अवसर पर आयोजित आठ दिवसीय प्रार्थना श्रृंखला के प्रथम दिन विशेष प्रार्थना एवं प्रारम्भिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समारोह की शुरुआत कथीड्रल महागिरजाघर के प्रधान पुरोहित बेन्यामिन द्वारा किए गए स्वागत सम्बोधन के साथ हुई। प्रारम्भिक प्रार्थना श्रद्धेय मेल्विन चार्ल्स ने की। गायन मण्डली ने अवसरानुकूल भजन गीत गाए। आगरा डायोसिस के बिशप अतिश्रद्धेय पी.पी. हाबिल ने आशीर्वचन कहे तथा फादर लुईस खेस ने अंतिम प्रार्थना की।

क्लर्जी फैलोशिप के सचिव फादर मून लाजरस ने बताया कि 'मसीही एकता का अठवारा मसीही पंचांग का एक महत्वपूर्ण भाग है। इस दौरान वैश्विक व स्थानीय स्तरों पर सभी गिरजाघरों व मसीही संस्थानों में मसीही आध्यात्मिकता, एकता तथा देश में शान्ति सद्भावना व भाइचारे के लिए विशेष प्रार्थनाएं आयोजित की जाती हैं। इसी श्रृंखला में आगरा में भी पिछले कई सालों से इसी प्रकार की प्रार्थना सभाएं विभिन्न गिरजाघरों में प्रति दिन संध्या समय आयोजित की जाती है। समापन आगामी 24 जनवरी को स्थानीय निष्कलंक माता महागिरजाघर में होगा।

इस अवसर पर श्रद्धेय फादर स्टीफन एवं श्रद्धेय हॉरिस लाल द्वारा पवित्र बाईबिल से पाठ पढ़े गए। तत्पश्चात मुख्य वाचक फादर ग्रेगरी ने सामुदायिक एकता सम्बन्धी हृदयस्पर्शी प्रवचन दिया। उन्होंने अपने प्रवचन में बताया कि प्रभु ईसा मसीह की शिक्षाएं आज भी सार्थक हैं। साथ ही सभी मसीही विश्वासियों की आध्यात्मिकता बुलाहट एवं एकता पर प्रकाश डाला एवं वर्तमान समय में इसकी आवश्यकता एवं महत्व पर गंभीर चर्चा की। प्रार्थना समारोह में आगरा के सभी प्रमुख गिरजाघरों के मुख्य पुरोहितों सहित अनुयायियों ने भी भाग लिया। अठवारे के दौरान एकल व समूह गान प्रतियोगिता एवं बाइबिल क्विज़ होंगी।

- लॉरेन्स मसीह
सेंट पैट्रिक्स चर्च, आगरा कैंट

San Damiano Province, Noida

Noida, 24 Nov. We, the Sisters of Franciscan Clarist Congregation (FCC) San Damiano Province, were blessed to have a visit by our beloved Archbishop Most Rev. Dr. Raphy Manjaly. His Grace was warmly welcomed by the 59 members of FCC, attending Provincial Synaxis at San Damiano Provincialate, Noida. He was accompained by V. Rev. Joseph Darbe, Vicar General of the Archdiocese and Parish Priest of St. Mary's Church, Noida. Later on we participated in the holy Eucharist, offered by the Archbishop and concelebrated by our V.G. In his inspiring homily His Grace on emphasized on the good qualities of a leader. He prayed for the decent of the Holy Spirit on the Synaxis; before departing, he blessed all of us participating in the synaxis.

New Provincial Team of FCC, San Damiano Province, Noida

On 26th November 2021, Provincial Election Synaxis was held in San Damiano Province, Noida where Rev. Mother Ann Joseph was elected as the new Provincial Superior. Mother Ann Joseph was serving as the Mother General of the Franciscan Clarist Congregation from the year 2015-2021. She also has served the Congregation as General Councillor, Provincial, Provincial Councillor, Novice Mistress and Principal. Newly elected Provincial Councillors are Rev. Sr. Angel Grace, Rev. Sr. Therese Porathur, Rev. Sr. Aruna Therese and Rev. Sr. Stella Jees. Provincial Finance Officer is Sr. Starlin and Provincial Secretary is Sr. Jisha John.

Sr. Ann Joseph, FCC
San Damiano Provincialate, Noida

Papal Nuncio visits St. Mary's Noida

On January 2, 2022 all Churches in Delhi and the NCR were closed due to the extensive spread of Omicron. But it was a fantastic day for St. Mary's Parish, Noida as His Excellency Leopoldo Girelli, the Apostolic Nuncio to India and Nepal paid a brief visit to St. Mary's Church Noida. The solemnity began with the Eucharistic celebration. During the Mass, he conveyed greetings and blessings from His Holiness, Pope

Francis. Following the Holy Mass, we had a brief interactive session with all the Parish Associations during which His Excellency skillfully instructed us. There was also a presentation of the functioning parish's various associations' reports. He was quite pleased with the activities which are very well taken under the able guidance of Rev. Fr. Joseph Dabre, the Parish Priest and all the priests of the parish, as well as by various heads of the pious associations. There was a photographic session in which all members of various associations took part. Due to His Excellency's hectic schedule he had to say an early good-by to all of us. The day concluded with high tea.

Fr. Lloyd Lobo, St. Mary's Church, Noida

NATIONAL NEWS INTERNATIONAL

Mother Teresa's Nuns Evicted

In yet another instance of rubbing salt into the wound, the Missionaries of Charity (MC) nuns have been evicted from their Shishu Bhawan in Kanpur Cantonment on January 3. The Shishu Bhawan was founded by Bharat Ratna and Nobel Laureate Mother Teresa.

This home for orphaned, destitute and abandoned children was established in June 1968, when the property was purchased from a private entity. For the last 53 years the Missionaries of Charity enjoyed its peaceful possession. This home gave over 1500 babies in adoption as provided for in law. They also served thousands of other poor and deprived like leprosy patients, unwed mothers and children of construction or migrant labour.

According to a press release issued by the Indian Catholic Forum, the Defence Estates Office (DEO) that claims to own all the land in the 62 cantonments in India, took the action claiming that Shishu Bhawan was built on lease land and the 90-year lease expired in 2019.

"Thereafter the sisters were trespassers for which they would have to pay a penalty of Rs. 1 crore per annum, amounting to Rs. 2 crores," the release said.

The DEO seemed to have been blind to the altruistic services the MC nuns rendered to all in need, irrespective of caste or creed.

The nuns ran from pillar to post in Lucknow and New Delhi but were unable to get a sympathetic hearing from the DEO or an appointment with the Defence Minister. Sr Prema, the Superior General of the congregation, felt that they could not meet the demands of the Defence establishment, more so now that even their access to foreign funding had also been denied due to the rejection of their application for renewal of their FCRA account.

"In fear and trembling, the Missionaries of Charity meekly surrendered before the army authorities and handed over peaceful possession of their home to the DEO on 3rd January."

The eleven remaining orphan children, most of whom were severely handicapped, were relocated to other Shishu Bhawans in

neighbouring Allahabad, Varanasi, Bareilly and Meerut.

The Catholic Forum Convener Chhotebhai said the citizens of Kanpur were outraged at this eviction and takeover, but remained mute spectators as the nuns had already decided to surrender the property, probably in the hope that by doing so the existing demand of Rs. 2 crores would be waived and that their peaceful act would hold them in good stead while re-applying for the FCRA account.

What will now happen to those 1500 families that had adopted children from Shishu Bhawan? It was always like a Nanihal (grandmother's home) for them. So too the orphaned who were given away in marriage looked to Shishu Bhawan as their maika (mother's home), the release said.

The release further stated: "On what basis did the DEO fix an arbitrary demand of Rs 1 crore per annum on these poor sisters? .... It certainly doesn't paint the army or DEO in a good light. Did it deliberately choose a soft target knowing that it did not have the stomach for a fight? This selective targeting also seems to have the mal-odour of a communal bias. Is this how the nation repays the true desh bhakts, those who serve the neediest of society without expecting anything in return?"

The action against Missionaries of Charity in Kanpur comes close on the heels of the rejection of their application for renewal of FCRA account due to some 'adverse inputs' received by the government against the Congregation.

In another instance, a case was registered against a home for girls in Gujarat's Vadodara city, run by the MC nuns, over reports of alleged forced conversion of inmates. There had been instances of raids conducted in their some other homes too in the recent past.

Former Bishop Franco Mulakkal Acquitted By Kottayam Court in 2018 Rape Case Filed by Nun

A court in Kerala on Friday Jan, 14 acquitted Roman Catholic Bishop Franco Mulakkal of the charges of raping a nun in a convent in the southern state. As the prosecution failed to produce evidence against the accused, the Additional District and Sessions Court II acquitted the Bishop.

Kottayam district additional sessions court judge G. Gopakumar pronounced the verdict on Friday after a trial of 105 days. "Praise the Lord," Franco said after the verdict. Meanwhile, the Jalandhar diocese welcomed the order.

The charge sheet against Mulakkal named 83 witnesses, including the Cardinal of the Syro-Malabar Catholic Church, Mar George Alencherry, three bishops, 11 priests and 22 nuns.

धर्मसभा की सफलता के लिए प्रार्थना

हे पवित्र आत्मा, हम तेरे नाम पर यहाँ उपस्थित हैं। तू ही हमारा एकमात्र मार्गदर्शक है। तू हमारे हृदयों में अपना वास कर ले और हमें वह मार्ग दिखा, जिस पर हमें चलना और निरन्तर आगे बढ़ते रहना चाहिए।

हम सब कमज़ोर और पापी हैं। हम किसी भी प्रकार की अव्यवस्था को बढ़ावा न दें। अज्ञानता हमें गलत मार्ग पर न ले जाए और न ही पक्षपात हमारे कार्यों को प्रभावित कर सके।

तुझमें हमारी एकता बनी रहे, जिससे हम एक साथ मिलकर अनन्त जीवन की ओर आगे बढ़ें और कभी भी सत्य एवं सद्मार्ग से न भटकें।

हम तुझसे यह प्रार्थना करते हैं, जो हर स्थान पर और हर समय पिता और पुत्र के साथ-साथ युगानुयुग तक कार्य करता है। **आमेन**

Divine Services in the Churches of Agra City

❑ **Cathedral of the Immaculate Conception**
(Near St. Peter's College),
Wazirpura Road, Agra - 282 003 (U.P.)
Mobile: 7753981619
Friday: 7.00 a.m., Saturday: 5.00 p.m.
Sunday Masses: 9.00 a.m./5.00 p.m.
Daily Evening Mass: 5.00 p.m. (Hindi)

❑ **Church of Pieta**
(Emperor Akbar's Church)
(Near St. Peter's College), Wazirpura Road,
Agra - 282 003 (U.P.)
Mobile: 7753981619
Daily Evening Mass: 5.00 p.m. (Hindi)

❑ **St. Mary's Church**
(Near Mother Teresa's Home)
Pratappura, Agra - 282 001 (U.P.)
Mobile: 8800437242/8171871818
Sunday Masses: 8.30 a.m. & 5.00 p.m. (Eng.)
Saturday Evening Mass: 5.00 p.m. (Eng.)
Friday Mass: 7.00 a.m. (Eng.)

❑ **St. Patrick's Church**
118, Prithvi Raj Road,
Agra - 282 001 U.P.
Phone: 0562-2225266/8318022688
Sunday Mass: 8.30 a.m. Rosary/Mass
Saturday Evening Mass: 5.00 p.m.
Friday Mass: 5.00 p.m. Adoration/Mass

❑ **Sts. Simon & Jude Church**
(Near Canara Bank)
Kaulakha, Devri Road, Agra
Mobile: 9917181577
Friday & Saturday: 7.00 a.m.
Sunday Mass: 8.30 a.m. (Hindi)

❑ **St. Thomas' Church**
C/o St. Francis School
UPSIDC, Sikandra
Agra - 282 007
Mobile: 8395886570
Sunday Masses: 8.30 a.m. (Hindi)
Friday & Saturday: 7.00 a.m.

One Solitary Life

He was born in an obscure village, the child of a peasant woman. He grew up in still another village, where He worked in a carpenter shop until He was thirty. Then for three years He was an intinerant preacher. He never wrote a book. He never held an office. He never had a family or owned a house. He didn't go to college. He never visited a big city. He never travelled two hundreds miles from the place He was born. He did none of the things one usually associates with greatness. He had no credentials but Himself. He was only thirty-three when the tide of public opinion turned against Him. His friends ran away. He was turned over to His enemies and went through the mockery of a trial. He was nailed to a cross between two thieves. While He was dying, His executioners gambled for His clothing, the only property He had on earth. When He was dead, He was laid in a borrowed grave through the pity of a friend. Many centuries have come and gone, and today He is the Central Figure of the human race and leader of mankind's progress. All the armies that ever marched, all the navies that ever sailed, all the parliaments that ever sat, all the kings that ever reigned, put together, have not effected the life of man on earth as much as that One Solitary Life.

Courtesy: Yash Lazarus, Agra

Archdiocese at a glance...cont.

New Sisters Provincials with their team; FCC Noida & CFMSS, New Delhi

His Excellency Abp. Leopoldo Girelli (Apostolic Nuncio) in St. Mary's Church, Noida

Nirmal MC is now in CWC

Amit Kapoor helping poor in H.P.

Christmas Joy in SPC, Agra

Annual Octave of Prayer for Church Unity, Agra

Simon weds Shefali
(16 Oct. 2021, Cathedral)

Sr. Kiran Toppo, CJ (Sikandra)
Final Profession, 30.01.2022. Jhansi

Fr. Apollin Lobo (Allahabad)
left us on 15 Jan. 2022

Editorial Team : Fr. E. Moon Lazarus, Fr. Jacob P., Dr. Antony A. P., Mrs. Nishi Augustine

With Best Compliments From :

The Manager, Principal, Staff and Students of

St. Mary's Convent School

Shamshabad Road, Agra, Uttar Pradesh

Website : www.stmarysagra.org, Email: stmarysshamshabad@yahoo.in

For Private Circulation Only

Printed at:
St. Joseph's Printing School
Motilal Nehru Road, Agra-3
Mob. : 9457777308, 7983441856

Edited and Published by
Fr. E. Moon Lazarus
Cathedral House
Wazirpura Road, Agra-282 003
E-mail : agradiance@yahoo.com